आर. ए. एन पंजीयन क्रमांक
CHHIN/2017/72506

वर्ष 04 अंक 06 अगस्त 2020

किलोल

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580 / 1, गली नं.17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर (छ.ग.) 492007
ई-मेल : wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

अनुक्रमाणिका

मेरा भारत महान 6

नन्हा सिपाही 8

अपना वतन 9

कोशिश कर 11

हमारे प्रेरणास्रोत- हसरत मोहानी 12

भारत भुइँया महान 14

चींटी 16

पर्व आजाद भारत का 17

मित्रता 18

जब नेताजी सुभाष बने प्रधानमंत्री 19

भगवान अगर बच्चे होते 22

पहेलियाँ 24

सैनिक 26

मानसून 28

अंधविश्वास का जन्म 29

भाईचारा 30

हमारा गाँव 31

दाँत का दर्द 32

नन्हें-मुन्हें बच्चे हम 34

नटखट नन्ही 36

चीन की गुस्ताखी- गलवान घाटी 38

O, My Dear 39

मैं भी सिपाही 40

बच्चों पर मैं लिखता कविता 42

बारिश 44

योग 45

"गुरु तुझे सलाम" कार्यक्रम में विद्यार्थियों के विचार 47

उलान बाटी 49

जानवरों के नाम 50

पिता 51
फल पृथ्वी पर क्यों गिरा? 53
चिड़िया रानी 54
गुड़िया 55
कविता, गीत, संगीत के माध्यम से शिक्षा में नवाचार 56
जंकफूड 57
पहेलियाँ 59
पेड़ लगाव 61
आईना 62
कृष्ण लीला 63
शिक्षक 65
आम 67
चोरी करना बुरी बात है 68
तितली 69
माँ 71
मेरा स्कूल 73
गुल्लक 74
भारत माता 75
पढ़ किसान 77
हम बच्चे 78
घड़ी 79
सफलता की कहानी :-श्रीराम यालम की ललक 80
DEAR MOM 82
तिरंगे की शान 83
गुरु 84
लगन 86
सावन आगे 88
स्कूल 90
कम्प्यूटर 91
मानसिक स्वास्थ्य का जीवन में महत्व 93

सुग्घर हावौं मैं गाँव रे 95
मेरा भारत देश महान है 97
बीते पल ना भूले मन 99
प्रकृति का प्यार 100
साहसी बच्चे 101
Memories and Rains 103
राजा बेटा कहलाऊँगा 105
बरखा आई 106
चित्र देख कर कहानी लिखो 108
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 109
हंस और उल्लू 109
कु. श्रद्धा सुर्यवंशी, कक्षा आठवीं, शा.पू.मा.शाला, पंधी, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी 110
सच्ची मित्रता 110
कु. सुनीता साव कक्षा ग्यारहवीं, शास.उ.माध्य.शाला सांकरा, महासमुंद द्वारा भेजी गई कहानी 111
उल्लू और हंस की दोस्ती 111
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी 112
जीवन में शांति, मित्रता और पर्यावरणीय संतुलन 112
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 113
घण्टी बाजे 114
तब मिली आजादी 116
अभिनंदन करोना योद्धा 117
हरियाली और पेड़ 119
अम्बर से आग बरसती 121
Alphabet C for 2020 122
अच्छे इंसान बनो 124
स्वदेशी अपनाओ 126
प्लास्टिक 127
महामारी की पीड़ा 128
तुलसी 130
माँ के हाथ की रोटी साग 132

Affinity 134
बेरोजगारी का डर 136
पिकनिक बच्चों को प्यारी 138
A, B, C Request from a child 139
पिता "गृह कि छत" 140
अधूरी कहानी पूरी करो 141
फटी कमीज़ 141
कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गई कहानी 143
टेकराम धुव 'दिनेश' व्दारा पूरी की गई कहानी 144
संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी 145
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 146
चित्रा का हारमोनियम 146
बैंगन..बच्चों की दुश्मन 148
पर्यावरण 149
पञ्चतन्त्र की कथा- व्यापारी का पतन और उदय 151
बाल पत्रिका 'किलोल' 153
Everybody has a name! 155
हरेली 156
परोपकार 158
छत्तीसगढिया के बासी 159
हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि चरक 160
भाखा जनऊला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली) 163

संपादक

डा. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, प्रीति सिंह, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. रचना अजमेरा, डॉ. माया नायर, डॉ शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, शिप्रा बेग, कविता आचार्य

आवरण पृष्ठ एवं ई-पत्रिका

पुनीत मंगल

प्यारे बच्चों,

घर पर रहते हुए आपको अब बहुत दिन हो गए हैं.अब आप सभी को अपने- अपने स्कूल की याद आ रही होगी.

हरेली के साथ ही अब त्योहारों की भी शुरुआत हो गई है. अगस्त में ईदुज्जुहा, रक्षाबंधन, हलषष्ठी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस आदि मनाए जाएँगे. इन सभी पर्वों की किलोल परिवार की ओर से आप सभी को शुभकामनाएँ और बधाइयाँ. इन त्योहारों का आनंद लेते हुए कोरोना संक्रमण से अपने बचाव के लिए सावधान रहना मत भूलना. कोरोना संक्रमण के खतरे के कारण अभी स्कूल नहीं खुले हैं पर आप सभी नियमित रूप से अच्छी पुस्तकें पढ़ना और गणित के प्रश्न हल करने का अभ्यास जारी रखिए. किलोल पत्रिका के माध्यम से हम आपकी पढाई जारी रखने का एक माध्यम बनने की कोशिश कर रहे हैं. साथ ही हम यह भी चाहते है कि आप कुछ न कुछ जैसे कविता, कहानी या कोई रोचक सा लेख लिखकर हमें भेजें ताकि हम उन्हे किलोल के आगामी अंकों में प्रकाशित कर सकें.

आपका

आलोक शुक्ला

मेरा भारत महान

रचनाकार-तेजेश साहू

इसकी नदियाँ शान बढ़ातीं,
हँसतीं-खेलतीं और बलखातीं.
आओ, हम सब करें नमन,
त्याग दें अपना तन-मन,
यह हमने लिया ठान है,
मेरा भारत महान है.

यहाँ का अजूबा ताजमहल,
यहाँ का पवित्र गंगाजल,
और यहाँ के हरे-भरे,
खेत और खलिहान हैं,
तिरंगा इसकी शान है.
मेरा भारत महान है.

इस देश में नहीं होता,
जात-पात का भेदभाव,
इसीलिए तो वीर जवान,

इसकी रक्षा में देते,
अपना बलिदान है.
मेरा भारत महान है.

यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग,
करते योग रहते हैं निरोग,
यहाँ के वीर जवान सीमा पे,
रहते अपना सीना तान हैं.
इन पर हमें अभिमान है
मेरा भारत महान है.

नन्हा सिपाही

रचनाकार- नीरज त्यागी

बनकर नन्हा सिपाही,
मैं देश के काम आऊँगा.
दादा जी,मेरे प्यारे दादा जी
मैं सीमा पर लड़ने जाऊँगा..

दुश्मन मचा रहा आतंक,
मैं भी उनसे लड़ जाऊँगा.
पापा लड़ते है सीमा पर,
मैं उनका साथ निभाऊँगा..

हैं पास मेरे छोटी बंदूक मेरी,
मैं दुश्मन पर उसे चलाऊँगा.
साथ है मेरे छोटे-छोटे साथी,
मैं सबको वहाँ ले जाऊँगा..

हम सब बेशक है छोटे बच्चे,
लेकिन देश के काम आएँगे.
अपनी बाल सेना बनाकर,
दुश्मन को वहाँ से भगाएँगे..

अपना वतन

रचनाकार- दिनेश कुमार चन्द्राकर

मन में महके मिट्टी की खुशबू,
तन में चहके इस धरती का रंग.
इस मातृभूमि की सेवा के लिए,
हर दिल में रहे नया जोश- उमंग.

रहे सुरक्षित अपना वतन,
मिल-जुलकर हम करें जतन.
आँख उठाए जो देश के दुश्मन,
कर दें हम उन सबको खतम.

जिएँ सदा इस अभिमान से,
बेटे हैं हम हिंदुस्तान के.
बेटे का फर्ज हम निभाएँगे,
इस मिट्टी का कर्ज चुकाएँगे.

सौ बार जनम लू माँ,
तेरा ही लाल कहाऊँ.
हर जनम सैनिक ही बन,
शत्रु को हर बार हराऊँ.

सागर की लहरों-सा लहराए,
ऊँचे आसमान में फहराए.
अपनी भारत माँ का झंडा,
शान से फहराए तिरंगा.

कभी न चाहा हमने,
लड़ाई, दंगा और अशांति.
रहे सलामत देश-दुनिया में,
सत्य, अहिंसा और शांति.

तन- मन क्या यह जान है अर्पित,
वतन पर हर शान समर्पित.

कोशिश कर

रचनाकार- संतोष कुमार तारक

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा.

अर्जुन-सा साध धनुष-बाण,
मरूस्थल से जल निकलेगा.

मेहनत कर, रोप पौध तू,
एक न एक दिन फल निकलेगा.

हिम्मत कर के आगे बढ़ जा,
समस्याओं का हल निकलेगा.

उम्मीदों को जिन्दा रख तू,
पर्वत से गंगाजल निकलेगा.

यदि झूठा प्रपंच किया तो,
सच है 'तारक' मुसल निकलेगा

हमारे प्रेरणास्रोत- हसरत मोहानी

रचनाकार- प्रीति सिंह

हैलो बच्चो,

आज हम बात करेंगे एक ऐसी शख़्सियत की जो न केवल एक अच्छे पत्रकार बल्कि एक अच्छे साहित्यकार और आज़ादी की लड़ाई के सिपाही भी थे. हम बात कर रहे हैं सैय्यद फ़ज़ल-उल-हसन 'हसरत' जी की. जिनका पेन नेम हसरत मोहानी है अर्थात् वे हसरत मोहानी के नाम से गजलें लिखा करते थे. हसरत मोहानी का जन्म उत्तर प्रदेश के ज़िला उन्नाव में सन1874 में हुआ था. आपके वालिद (पिता) का नाम सैय्यद अज़हर हुसैन था. हसरत मोहानी ने अपनी आरंभिक तालीम घर पर ही हासिल की और 1903 में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से बी.ए.किया. 1904 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और बाल गंगाधर तिलक द्वारा चलाए गए स्वदेशी आंदोलन में हिस्सा लिया. 1921 में हसरत ने सर्वप्रथम “इंक़लाब ज़िंदाबाद” का नारा अपनी कलम से लिखा. इस नारे को बाद में भगत सिंह ने मशहूर कर दिया.

1903 में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी से बी.ए.करने के तुरंत बाद हसरत जी ने उर्दू पत्र 'रिसाला' शुरू किया. इसमें शुरुआत से ही राजनैतिक लेखों की प्रमुखता रही. 1904 में हसरत ने रिसाला के माध्यम से स्वदेशी का ज़ोरदार समर्थन किया. हसरत मोहानी जी ने स्वदेशी के समर्थन में सिर्फ लिखा ही नहीं, बल्कि इसे अपने जीवन में भी सख्ती से अपनाया. इस बारे

में एक घटना है कि एक बार हसरत मोहानी कड़कड़ाती सर्दी में अपने एक दोस्त के घर पर रुके. दोस्त ने उन्हें जो कम्बल ओढ़ने को दिया वह इंग्लैंड का बना हुआ था. हसरत जी ने रात भर सर्दी में रहना मंज़ूर किया मगर वह कम्बल नहीं ओढ़ा. बाद में अलीगढ़ में उन्होंने मोहानी स्वदेशी स्टोर शुरू किया, जहाँ कम दामों पर हिन्दुस्तान में बने कपड़े और कम्बल वगैरह मिलते थे. हसरत मोहानी जब अलीगढ़ से कानपुर गए तो वहाँ भी उन्होंने खिलाफत स्वदेशी स्टोर लिमिटेड स्थापित किया.

1930 में हसरत जी ने ही महात्मा गाँधी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन का रास्ता दिखाया. 1908 में अंग्रेजों के खिलाफ एक लेख लिखने के आरोप में अंग्रेजी सरकार ने हसरत मोहानी को गिरफ्तार कर लिया. हसरत को 2 साल कैद और 500 रूपए जुर्माने की सजा दी गई. जेल में उन्हें रोज एक मन अनाज चक्की से पीसना पड़ता था. मगर ये मशक्कत भी हसरत जी का हौसला न तोड़ सकी. 1909 में सजा पूरी करने के बाद जब हसरत रिहा हुए तो उनके तेवर पहले से भी ज्यादा उग्र थे. उर्दू में लिखना उन्होंने फिर से शुरू किया और एक लेख में पूर्ण स्वराज की हिमायत कर दी. 1921 में उन्होंने कांग्रेस अधिवेशन में बाकायदा पूर्ण स्वराज के लिए प्रस्ताव रखा और इसके समर्थन में बहस की. आखिरकार 1929 में कांग्रेस ने भी पूर्ण स्वराज की विचारधारा को अपनाया.

हसरत मोहानी हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे. उन्होंने कृष्ण की भक्ति पर खूब शायरी की. 1947 में भारत विभाजन का उन्होंने बहुत विरोध किया और विभाजन के बाद हिंदुस्तान में ही रहना पसंद किया. 2014 में भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया.

लखनऊ में रकाबगंज से मेडिकल कॉलेज वाले रास्ते पर मौलवी अनवार का बाग़ पड़ता है. 1951 में यहीं पर हसरत मोहानी सुपुर्द- ए-ख़ाक हुए थे. मरीजों और खैरख्वाहों की लम्बी क़तार इस मजार पर बराबर बनी रहती है, मगर बहुत कम लोग यह बात जानते हैं कि यह मज़ार मौलाना हसरत मोहानी का है. हसरत मोहानी वही शायर हैं जिनकी गजल 'चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है' लगभग सभी ने सुनी है हसरत मोहानी हमारे दिल और दिमाग़ में ताऊम्र ज़िंदा रहेंगे.

भारत भुइँया महान

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

धरम करम के पाठ पढ़ाथे
गीता अउर कुरान
ये भारत भुइँया हर भैया
दुनिया मा हे महान.

धरती दाई के सेवा मा
असल पछीना गारत हे
चाहे कतको भी दुख पाये
पीरा ला भुलियारत हे
धरती दाई के माटी ला
माथा मा चंदन लगाओ
जिंदगी मा सुभिमान रहू
भुइँया के वंदना गाओ.

परहित मा जांगर पेरथे,
धरती के भगवान.

जेकर वीरता देख के दुश्मन,
हपटत ह-कूदत भागत हे.
रक्षा खातिर बंदूक धरके,
सरहद मा जउन जागत हे.
जेकर आघू चीनी पाकी,
कभू टिक नई पावे जी.
अइसन बीर मन के गाथा
जग हर सुग्घर गावे जी.
देश के खातिर जान लुटाय,
अइसन हमर जवान.

अबड़ मया के प्रेमभाव हे,
देश के सब नर-नारी मा.
किसम-किसम के फूल खिले हे
भारत के फुलवारी मा
भेदभाव ल छोड़ के इहाँ
मिलजुल के सब रहिथैं जी.
देश के बिपदा दूर करे बर,
दुख-सुख ल सब सहिथैं जी.
बइरी कोनो कइसे होही,
सब झिन इहाँ मितान
भारत भुइँया ये जम्मो,
दुनिया ले संगी महान.

चींटी

रचनाकार- जतिन वर्मा, वाघोली, पुणे, महाराष्ट्र

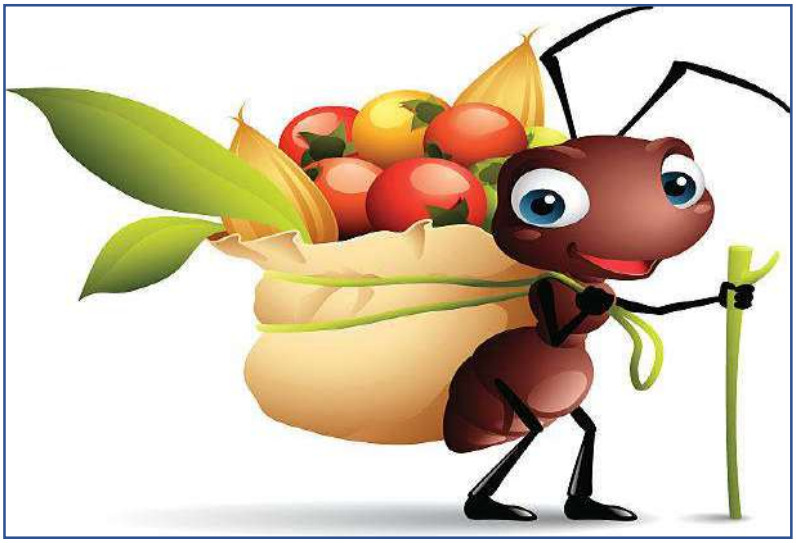

देखो- देखो जाती चींटी,
अनुशासन समझाती चींटी.

बिना थके बढ़ती ही जाती,
हिम्मत खूब जुटाती चींटी.

इक कतार में चलती जाती,
सबको राह दिखाती चींटी.

अन्न इकट्ठा करने जाती,
अपना फर्ज निभाती चींटी.

बरखा आने से पहले ही,
अपना रसद जुटाती चींटी.

छोटी, नन्ही प्यारी-प्यारी,
सबके मन को भाती चींटी.

पर्व आजाद भारत का

रचनाकार- प्रतिभा त्रिपाठी

पर्व ये आजाद भारत का.
विश्व में मशहूर है..

पूरे भारतवासी दिल से,
झंडे को देते सलामी.
प्रण करते हैं मर मिटने का,
याद करके दिन गुलामी..

इतिहास के पन्नों में ये दिन.
एक गज़ब का नूर है..

देश सजा है दूल्हे सा,
बाजे- गाजे बज रहे.
चहुँ ओर हैं ढेरों खुशियाँ,
बच्चे- बूढ़े नाच रहे..

नया गीत है- नये रंग हैं
और निराले सुर हैं..

मित्रता

रचनाकार- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल', लहार, भिण्ड, म०प्र०

जीवन में है मित्र का, महत्वपूर्ण स्थान.
वफादार यदि मित्र, है सभी काम आसान.
है सभी काम आसान, कभी यदि संकट आए.
सच्चे मन से मित्र ही, मित्र का साथ निभाए.
कह 'कोमल' कविराय, बात यह रख लो मन में.
मित्र भले हो एक ही, किंतु सच्चा जीवन में.

जब नेताजी सुभाष बने प्रधानमंत्री

रचनाकार- नीलेश वर्मा

हमारे देश को अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता मिलने की याद में हम प्रतिवर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाते हैं. पर कम ही लोग यह जानते हैं कि 15 अगस्त 1947 के लगभग चार साल पहले नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारतीय सरकार की स्थापना कर दी थी. आप यह तो जानते हैं कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस की फौज का नाम आजाद हिन्द फौज था. आइए हम आपको नेताजी की आजाद हिन्द फौज और उनके द्वारा स्थापित सरकार के बारे में कुछ तथ्य बताते हैं.

1942 मे जब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था, उन्ही दिनों कुछ भारतीय राष्ट्रवादियों ने दक्षिण पूर्व एशिया में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के लिए सशस्त्र सेना का गठन करने का निश्चय किया. उस समय जापान में रह रहे भारतीय क्रांतिकारी रासबिहारी बोस ने भारतीय राष्ट्रवादियों के पक्ष मे जापान का समर्थन प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. 28 मार्च 1942 को रासबिहारी बोस ने टोक्यो में एक सम्मेलन में इण्डियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की. साथ ही भारत की स्वतंत्रता के लिए सेना बनाने का प्रस्ताव भी पेश किया गया.

उसी दौरान मलेशिया और म्यांमार में ब्रिटिश भारत और उसके मित्र देशों का जापानियों से युद्ध हुआ था इस युद्ध में जापान ने लगभग 40000 भारतीय सैनिकों को युद्धबंदी बनाया था. जापान के सहयोग से इन युद्धबंदियो को इण्डियन इंडिपेंडेंस लीग में शामिल होने और इसकी सैन्य शाखा आजाद हिन्द फौज का सैनिक बनने के लिए प्रेरित किया गया.

उधर नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने 1941 मे जर्मनी के बर्लिन में इण्डियन लीग की स्थापना की थी. बाद में उन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया जाने का निश्चय किया और पनडुब्बी द्वारा उस समय जापानी नियंत्रण वाले सिंगापुर पहुँचे.जून 1943 में टोक्यो रेडियो से प्रसारित अपने संदेश में नेताजी ने कहा कि अंग्रेजों से यह आशा करना व्यर्थ है कि वे स्वयं अपना साम्राज्य छोड देंगे. हमें भारत के भीतर और बाहर से स्वतंत्रता के लिए स्वयं संघर्ष करना होगा. इस संदेश से प्रभावित होकर रासबिहारी बोस ने आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व नेताजी सुभाषचंद्र बोस को सौंप दिया.

5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउनहाॅल के सामने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च कमाण्डर के रूप में सेना को संबोधित करते हुए नेताजी ने प्रसिद्ध दिल्ली चलो का नारा दिया.

21 अक्तूबर 1943 को सुभाषचंद्र बोस ने सिंगापुर के कैथी सिनेमा हाॅल में आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति के रूप में स्वतंत्र भारत की सरकार की स्थापना की घोषणा कर दी. नेताजी इस सरकार में प्रधानमंत्री, विदेशी मामलों के मंत्री और सेना के सर्वोच्च सेनापति चुने गए थे. वित्त विभाग एस सी चटर्जी, प्रचार मंत्री एस ए अय्यर तथा महिला संगठन का प्रभार लक्ष्मी स्वामीनाथन को सौंपा गया था. इस सरकार को जापान जर्मनी फिलीपीन्स थाईलैंड कोरिया इटली और आयरलैंड आदि 9 देशों ने मान्यता दी थी.

आजाद हिन्द सरकार का अपना बैंक भी स्थापित किया गया जिसका नाम आजाद हिन्द बैंक था. आजाद हिन्द बैंक ने एक रुपये से लेकर एक लाख रुपये तक के नोट और सिक्के जारी किए थे. एक लाख रुपये के नोट पर सुभाषचंद्र बोस की तस्वीर छापी गई थी. आजाद हिन्द सरकार का अपना डाक टिकट और झण्डा भी था. नेताजी ने जापान और जर्मनी के सहयोग से आजाद हिन्द सरकार की ओर से नोट और डाक टिकटों की छपाई की भी व्यवस्था की थी. जापान ने द्वितीय विश्व युद्ध में जीते हुए अंडमान और निकोबार द्वीप नेताजी की सरकार को सौंप दिए.

30 दिसंबर 1943 को अंडमान निकोबार में पहली बार नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारत सरकार के प्रधानमंत्री के रूप में तिरंगा फहराया था. यह तिरंगा आजाद हिन्द सरकार का था. नेताजी ने इन द्वीपों का नया नामकरण किया उन्होंने अंडमान का नाम शहीद द्वीप और निकोबार का नाम स्वराज्य द्वीप रखा. इसके बाद नेताजी ने सिंगापुर और रंगून में आजाद हिन्द फौज का मुख्यालय बनाया. 4 फरवरी 1944 को आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर आक्रमण किया और कोहिमा सहित कुछ भारतीय प्नदेशो को अंग्रेजी नियंत्रण से मुक्त करा लिया. 21 मार्च 1944 को दिल्ली चलो के नारे के साथ आजाद हिन्द फौज का भारतीय भूमि पर प्रवेश हुआ. जापानी सेना के साथ मिलकर आजाद हिन्द फौज कोहिमा और इम्फाल के भारतीय मैदानी क्षेत्रों तक पहुँच गई.

6 जुलाई 1944 को नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गाँधी के नाम एक प्रसारण जारी किया और अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए इस निर्णायक लड़ाई में जीत के लिए उनकी शुभकामनाएँ माँगी.उन्होंने कहा कि मै जानता हूँ कि ब्रिटिश सरकार भारत की स्वतंत्रता की माँग कभी स्वीकार नहीं करेगी यदि हमें आजादी चाहिए तो हमें खून के दरिया से गुजरने को तैयार रहना चाहिए. मैंने जो कुछ किया है देश और देश की प्रतिष्ठा के लिए किया है. भारत की स्वतंत्रता के लिए आखिरी लड़ाई शुरू हो चुकी है आजाद हिन्द फौज के सैनिक भारतीय भूमि पर सफलता पूर्वक लड़ रहे हैं. हम आपका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ चाहते हैं.

फरवरी से जून 1944 तक आजाद हिन्द फौज ने जापानियों के साथ मिलकर भारत की पूर्वी सीमा पर अंग्रेजो के विरुद्ध जोरदार सशस्त्र संघर्ष किया. 22 सितम्बर 1944 को शहीद दिवस मनाते हुए सुभाषचंद्र बोस ने अपने सैनिकों से कहा हमारी मातृभूमि स्वतंत्रता की तलाश में है “तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा” यह स्वतंत्रता की देवी की माँग है.

दुर्भाग्यवश बाद में परिस्थितियाँ बदल गई और विश्वयुद्ध में पासा पलट गया. ब्रिटेन और उसके मित्र देशों की जीत हुई. जर्मनी और जापान को हार माननी पडी. ऐसी परिस्थितियो में नेताजी ने टोक्यो के लिए प्रस्थान किया और फिर एक संदिग्ध विमान दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु होने की खबर आई परंतु इस घटनाक्रम की सच्चाई आज तक स्पष्ट नहीं हुई है.

इस तरह आजाद हिन्द फौज का सैनिक अभियान असफल हो गया. परंतु असफलता के बावजूद आजाद हिन्द फौज का इतिहास भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण और गौरवशाली अध्याय है.

भगवान अगर बच्चे होते

रचनाकार- शुभम पांडेय 'गगन', अयोध्या, उ.प्र.

रोज़ सबेरे उठना पड़ता,
रोज़ जाना पड़ता स्कूल.
रोज़ तुम भी करते होमवर्क,
सारी मस्ती जाते भूल.

मैडम भी डाँट लगाती तुमको,
कभी-कभी मम्मी की मार.
ढेर सारा करना पड़ता याद,
कविता, पहेली और चित्रहार.

रोज़ पढ़नी पड़ती किताबें,
टीवी देखने से होते दूर.
गर्मी की छुट्टी में मिलता,
हिल स्टेशन या विदेशी टूर.

रसगुल्लों के लिए होती लड़ाई,
आइसक्रीम के लिए करते चोरी.
जब जाते पकड़े मम्मी से तुम,
सुननी पड़ती कड़वी लोरी.

काश! तुम भी सब कर पाते,
भगवान अगर तुम बच्चे होते.
मन को समझ पाते हमारे,
अगर हमारे जितने कच्चे होते.

पहेलियाँ

रचनाकार- रीता मण्डल

1.
तीन अक्षर का मेरा नाम,
ज्ञान देना मेरा काम.
सभी चीजें सिखाती हूं,
ज्ञाता तुम्हें बनाती हूं.

2.
बीमार नहीं ये रहती,
फिर भी खाती गोली.
बच्चे बूढ़े डर जाते,
सुनकर इसकी बोली.

3.
तीन अक्षर का मेरा नाम,
मुझे देख रुक जाए काम.
प्रथम कटे तो दोस्त बन जाए,
मध्य कटे तो सिर बन जाए.

4.

दो भाई एक रंग के,
गहरा है इनका नाता.
एक दूजे से बिछुड़ जाए तो,
काम न कोई आता.

5.

दिखने में छोटी सी होती,
गज़ब भरा है ज्ञान.
इसको पढ़कर बन सकते हैं,
बहुत बड़े विद्वान.

उत्तर :- 1. किताब 2. बंदूक 3. सियार 4. जूते 5. किताब

सैनिक

रचनाकार- पुष्पा कुमारी, मेदिनीनगर, झारखंड

बिहारी, बंगाली, पंजाबी और मराठी जब बनते हैं जवान.
प्रांतों का मिलन होकर बन जाता है हिंदुस्तान.
हैं सभी भारतीय और एक ही है उनकी पहचान.
एकसूत्र में हैं बँधे होते जैसे जिस्म और जान.

त्याग, बलिदान, साहस, धैर्य का परिचय है सैनिक.
मर्दानी आवाज़ की गर्जन से, शत्रु काँपे ऐसा है निगहबान.
दूर से ही रौब उसका झलकता, खाकी वर्दी में देखो सैनिक की शान.
जेबों में ही इनका परिवार है रहता.
हँसी-ठिठोली और त्यौहार,
यादों में लिपटा होता है रिश्तों का संसार.
जल्द आऊँगा तुम्हारे पास, होता हर-बार का यही इकरार.

नापाक इरादों से बालिस्त भर जमीं के लिए,
जब दुश्मन उठाए कदम और लगाये घात.
भारत माता का वीर सपूत दुश्मन को रौंद
हो जाते जब वीरगति को प्राप्त.
तिरंगे में लिपटा हुआ आता लहू-लुहान,

तिरंगा भारत है और भारत में लिपटा है जवान.
पिता का गर्व से ऊँचा हुआ मस्तक,
माँ-बहन, पत्नी आँसुओ से देतीं सम्मान.
तोपों की सलामी से गूँजता जमीं और आसमान.
सैनिकों की वीरगाथा में दीप प्रज्वलित सदैव रहे,
सदियों तक अमर रहे, गूँजती रहे उनकी शान.

मानसून

रचनाकार- प्रिया देवांगन 'प्रियू'

मानसून है आया, छाई घटा घनघोर,
बिजली कड़के जोर से, वन में नाचे मोर.
पानी गिरता रोज़-रोज़, हर्षित होते किसान,
उपजाते हैं खेत में, लहराते हुए धान.
चलें हवाएँ जोर से, पक्षी करते शोर,
जाएँ किसान खेत को, होते ही वे भोर.
झूमें-नाचें लोग सब, आते ही बरसात,
फसल उगाने को सब, करें काम दिन-रात.
मानसून की आहट, मन को खुश कर जाय,
हरियाली चहुँओर है, फसलें भी लहलहाय.

अंधविश्वास का जन्म

रचनाकार- रोहित शर्मा, मौलाना आजाद रा. प्रौ. सं., भोपाल

एक समय की बात है. एक लड़के की शादी हो रही थी. शादी के कार्यक्रम में एक बिल्ली बार बार आकर सभी को परेशान कर रही थी. लोगो ने बिल्ली को पकड़कर मंडप के खम्भे से बाँध दिया.

कई साल बीत गए, अब उसी लड़के के बेटे की शादी हो रही थी तो उसने मंडप के खम्भे से एक बिल्ली बँधवाने के लिए कहा. जब लोगों ने उससे मंडप के खम्भे से बिल्ली को बँधवाने का कारण पूछा तो उसने कहा कि मेरी शादी में भी ऐसा ही हुआ था,जरूर इसका कोई मतलब होता होगा. यह सुनकर लोगों ने उस लड़के की बात मनकर एक बिल्ली को पकड़कर मंडप के खम्भे से बँधवा दिया.

उस लड़के ने बिल्ली को खम्भे से बाँधने का असली कारण जाने बिना यह मान लिया की ऐसा करना जरुरी परंपरा है. उसने एक सामान्य घटना को परंपरा का रूप दे दिया. इस तरह एक मामूली सी बात एक परंपरा बन गयी.

इसलिए हमें परंपराओं के वास्तविक तर्क पूर्ण कारण जानने की कोशिश करनी चाहिए और निरर्थक परंपराओं को छोड़ देना चाहिए.

भाईचारा

रचनाकार- प्रेमचन्द साव 'प्रेम'

भाईचारे पर हमें, अतुलित होता गर्व,
इसके ही बल पर बने, मानवता के पर्व.

भाईचारे का रहे, जग में अनुपम चित्र,
इससे ही परिजन बने, इससे ही मित्र.

भाईचारे से बने, सुंदर शुभकर देश,
मानवता के लिए है, यह उत्तम संदेश.

भाईचारे के बिना, नहीं किसी की खैर,
भाई से भाई लड़े, घर-घर फैले बैर.

भाईचारे से जगत में, होता सारा खेल,
'प्रेम' प्रेम सिर्फ़ प्रेम से, जग में होता मेल.

हमारा गाँव

रचनाकार- कु. अनिता साव, कक्षा छटवीं, शासकीय पूर्व माध्य. शाला बड़ेटेमरी, महासमुंद

गाँव हमारा कितना सुंदर,
एक सड़क है उसके अंदर.

मेरा स्कूल तालाब किनारे,
चारों ओर पेड़ कितने सारे.

सभी लोग रहते मिल-जुल के,
क्रोध, बैर भाव सब भूल के.

दाँत का दर्द

रचनाकार- डॉ. मंजरी शुक्ला, पानीपत, हरियाणा

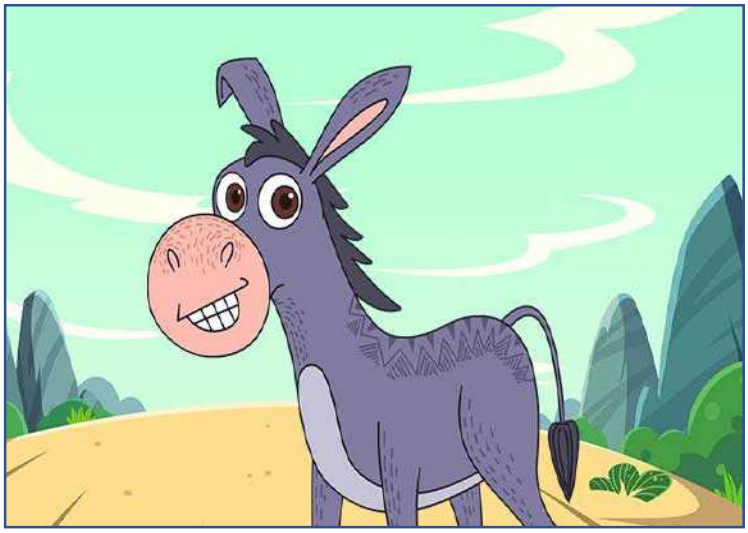

"मेरे दाँत में बहुत दर्द है" भोलू गधे ने चिन्नी बकरी से कहा.
“तो तुम उसको निकलवा क्यों नहीं देते.” चिन्नी ने भोलू से कहा.
“नहीं, नहीं ऐसा मत कहो, मुझे बहुत डर लगता है.”, भोलू ने चिन्नी से कहा.
तभी वहाँ पर रामू धोबी कपड़ों का गट्ठर लेकर आ गया और बोला-"चलो भोलू, हमें नदी पर कपड़े धोने चलना है.”
भोलू दाँत दिखाते हुए बोला- "मेरे दाँत में बहुत दर्द है."
रामू को तो सिर्फ़ "ही हिया" ही सुनाई पड़ा.
रामू ने भोलू के आगे घास डाल दी और बोला-"तुम अच्छे से खा लो फिर चलते हैं”.
भोलू घास के पास से हट गया.
चिन्नी हँसते हुए बोली-“रामू को कैसे समझाएँ कि तुम्हारे दाँत में दर्द है.”
बेचारा भोलू चुपचाप खड़ा रहा.
थोड़ी देर बाद रामू वापस आया और उसने देखा कि भोलू ने कुछ भी नहीं खाया.
रामू बहुत दयालु था. उसने प्यार से भोलू के ऊपर हाथ फेरते हुए कहा- "लगता है तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है. हम दोपहर में चलेंगे.”
भोलू फिर बोला- "मेरे दाँत में दर्द है.” पर रामू को "ही हिया" ही सुनाई पड़ा.
जब दोपहर को रामू आया, तो भोलू एक कोने में खड़ा था.
रामू को चिंता हुई पर उसे समझ नहीं आ रहा था कि भोलू को हुआ क्या है.
वह दुखी होते हुए घर पहुँचा तो उसका पाँच साल का बेटा मुन्नू बोला-"मैं खाना नहीं खाऊँगा, मेरे दाँत में दर्द है.”

ओह्ह्ह! कहते हुए रामू तुरंत भोलू के पास दौड़ा और बोला- "क्या तुम्हारे दाँत में दर्द है?" और भोलू ने तुरंत दाँत दिखते हुए कहा- "हाँ. मेरे दाँत में बहुत दर्द है।" इस बार भी रामू को "ही हिया" ही सुनाई पड़ा, पर इस बार रामू समझ गया था. उसने घर से लाकर तुरंत एक दवाई भोलू के दाँत पर लगा दी.

थोड़ी ही देर बाद भोलू चिन्नी के साथ हँसते हुए घास खा रहा था.

रामू ने बेटे को गोदी में उठाते हुए प्यार से कहा- "अब चलो, तुम्हें भी दाँतों के डॉक्टर के पास ले चलता हूँ."

बच्चा बोला- "नहीं, मुझे भी भोलू वाली दवा लगा दो, मुझे डॉक्टर से डर लगता है."

यह सुनकर रामू जोर से हँस पड़ा.

नन्हें-मुन्हें बच्चे हम

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

नन्हें-मुन्हें बच्चे हम,
रोज स्कूल जाते हैं.
अज्ञानता का अँधेरा मिटाने,
ज्ञान का दीपक जलाते हैं..

जब हम अ से अ: पढ़ते हैं,
स्वर को स्वर से गढ़ते हैं.
क से ज्ञ पढ़कर ही,
पुस्तक का पठन करते हैं..

हमारे नन्हे कंधों पर,
देश का भार हैं.
हमसे ही पूरी दुनिया,
हमसे ही पूरा संसार हैं..

हमसे ही स्कूल की आन हैं,
हमसे ही स्कूल की शान हैं.
हमसे ही शिक्षा हैं,
हमसे ही शिक्षक की पहचान हैं.

नटखट नन्ही

1. नन्ही: पापा, मेरे लिए बाँसुरी खरीद दीजिए.
   पापा: नहीं नन्ही, तुम बाँसुरी बजाकर सबको परेशान करोगी.
   नन्ही: नहीं पापा, मैं बाँसुरी तभी बजाऊँगी जब आप सभी सो रहे होंगे.

2. नन्ही: दादी देखो, यह बिल्ली बातें करती है, यह अपना नाम भी बता सकती है.
   दादी: अरे वाह! यह तो होशियार बिल्ली है. क्या नाम है इसका?
   नन्ही: इसका नाम है, म्याऊँ.

3. पापा: नन्ही, क्या तुमने अखबार वाले का बिल देखा है?
   नन्ही: नहीं पापा, पर क्या अखबार वाला बिल में रहता है?
   मैं तो सोचती थी कि बिल में सिर्फ चूहे रहते हैं.

4. नन्ही: दादी,मैंने एक चीज़ ढूँढ़ी है जिससे हम दीवार की दूसरी ओर देख सकते हैं.
   दादी: अरे वाह नन्ही! कहाँ है वह चीज? हमें भी दिखाओ.
   नन्ही: यह रही, खिड़की.

5. नन्ही: मैम, क्या आप मुझे उस काम के लिए सजा देंगी जो मैंने नहीं किया?
   टीचर: नहीं नन्ही, पर तुम ऐसा क्यों सोच रही हो?
   नन्ही: मैंने आज होमवर्क नहीं किया है न, इसलिए.

चीन की गुस्ताखी- गलवान घाटी

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

अरे चीनी अरे पाकी,
हमें तुम क्यों उकसाते हो.
सिंह सोये हुए है जो,
उन्हें क्यों कर जगाते हो.
स्वान की मौत मरते हो,
हिन्द की सीमा में आकर.
समझ आता नहीं तुमको,
सदा ही हार जाते हो.

जितना ज़ोर तेरी बंदुक में,
उतना अपनी भी लाठी में.
बनाता शेर अपने बेटों को,
ऊर्वर हिन्द पवित्र माटी में.
अगर चाहें तुझे रे चाइना,
दिखा देंगे तुझे आईना.
चटाई धूल वीर जवानों ने,
गलवान घाटी फिर न आना.

O, My Dear

Poet- Tikeshear Sinha "Gabdiwala"

Wake up! Get up!
O, my dear! O my son,
Look at the east
And the rising sun.
The sky became red
With breeze, flowing round,
Sitting on the branches
The birds making sound.

First you get fresh
Have the tea sweet.
To all these friends
Quick go to meet.
Listen me, O, my dear!
Care on points of mine.
Get ready, O, my son!
Have to study online.

मैं भी सिपाही

लेखक- नीरज त्यागी, ग़ाज़ियाबाद

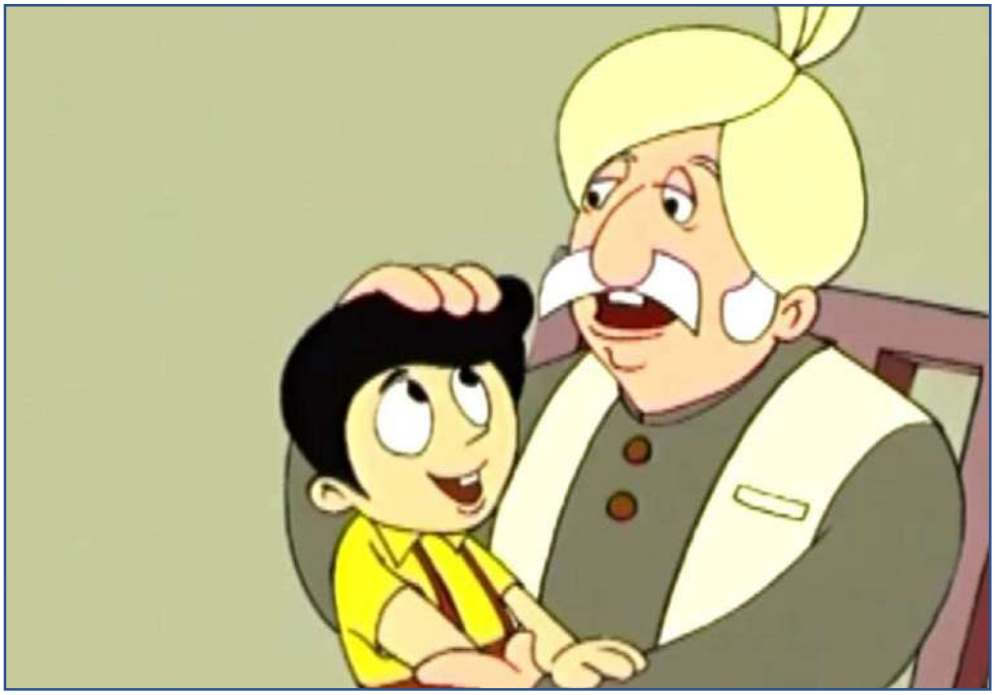

दादाजी इस कोरोना काल में हमने तो देश के सिपाही की तरह का कोई भी काम नहीं किया जबकि हमारी सेना सीमा पर दिन रात हमारे लिए काम करती है? 14 साल के राहुल ने बड़ी मासूमियत से यह सवाल अपने दादाजी से पूछा. दादाजी ने बडी ही शांति से राहुल को समझाते हुए कहा कि बेटा भले ही हम सभी घर पर ही रहे हैं लेकिन कोरोना काल में हम सभी ने एक सिपाही की तरह ही काम किया है.

राहुल ने आश्चर्य से पूछा दादा जी हम तो घर में थे; फिर हमने ऐसा कब किया? बेटा तुम्हारा बड़ा भाई जो कि एक व्यापारी है उसने इस समय में अपना काम बंद कर घर में रहना उचित समझा. नकली सैनिटाइजर बेचकर वह ज्यादा पैसा कमा भी लेता लेकिन समाज के लिए वैसा करना बड़ा ही निंदनीय होता. इसलिए तुम्हारा भाई भी एक सिपाही है जिसने घर मे रहकर बिना किसी को कोई नुकसान पहुँचाये अपना समय व्यतीत किया. वहीं तुम्हारी बडी बहन जो फैशन डिजाइनिंग का कोर्स कर रही है. उसने इस समय में घर पर रहकर 700-800 मास्क बनाकर जरूरतमंद लोगों में बाँटे. इस तरीके से उसने भी देश के लोगों के लिए एक सिपाही का ही काम किया है. तुम्हारी माँ ने समय-समय पर आसपास के गरीबों को खाना खिला कर उन्हें भूख से बचाया है. इसलिए उन्होंने भी एक सिपाही की तरह ही काम किया है.

अरे दादाजी तब तो आप और मैं ही रह गए जिन्होंने कोई भी काम देश के लिए नही किया. दादाजी ने राहुल को समझाया ऐसा नहीं है बेटा. मैं अपनी इस उम्र में बाहर न घूम कर घर में ही रहा और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखता रहा; तुमने भी इस समय में अपने खेलकूद का त्याग कर दिया. इसलिए तुमने भी एक सिपाही का ही काम किया है क्योंकि तुम्हे ऐसा करते देख तुम्हारे सभी दोस्त भी घर मे ही रह रहे हैं. अब राहुल अपने दादाजी की बातों से संतुष्ट हो गया था.

बच्चों पर मैं लिखता कविता

रचनाकार- देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

बच्चों पर मैं जब लिखता कविता,
जब बच्चों की पढ़ता कविता.
मन प्रफुल्लित हो जाता मेरा,
जैसे कल- कल बहती सरिता..

बचपन की जब याद आए,
तन-मन खुशबू से भर जाए.
मचल उठे कितना मन अपना,
बचपन के किस्से भूल न पाएँ..

बचपन के होते खेल निराले,
दिन- रात लगे कैसे मतवाले.
कुछ चिंता न हमें थी रहती,
सचमुच में हम भोले-भाले..
मात-पिता ने दिए संस्कार,

गुरु ने दिया ज्ञान का भंडार.
दादा-दादी और चाचा-चाची,
सबने सिखाया सेवा- सत्कार..

बारिश

रचनाकार- तेजेश साहू

बारिश आई, बारिश आई,
खुशहाली को संग है लाई.
बच्चे-बूढ़े मौज मनाते,
हँसते, खेलते और बलखाते.

बारिश ऐसा मौसम सुहाना,
अच्छा लगता पकवान खाना.
तितलियाँ उड़तीं लगतीं न्यारी
फसलें दिखतीं प्यारी-प्यारी.

यह लाती खेत में हरियाली,
किसान की मुस्कराहट निराली.
साँप-बिच्छू से रहना सावधान,
कभी-कभी ये पहुँचाते नुकसान.

बारिश की है छटा निराली,
किसानों की यही दीवाली.
खुशहाली, हरियाली लाती,
सबके मनको यह बहलाती.

योग

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

योग कर अपने को निरोग करें,
अपने जीवन का सदुपयोग करें.

योग से बने सुंदर काया,
इससे बने हैं सुदृढ़ छाया.

योग कर मन स्वच्छ बनाएं,
करें योग तन स्वस्थ बनाएं.

योग करने पर ना होता कोई धन खर्च,
लगाओ आसन,करो इन पर समय खर्च.

योग धर्म नहीं यह तो विज्ञान है,
निरोगी काया इसकी पहचान है.

सदा सुखमय जीवन वह है बिताता,
जीवन में योग को है जो अपनाता.

वरदान समझ जो है योग करता,
आलस भी उससे है दूर भागता.

जो प्रतिदिन करते हैं योग,
ना पड़ते बीमार रहते निरोग.

चुस्ती फुर्ती में रहते आगे,
आलस सदा है उससे भागे.

मन लगाकर करते जो कोई ध्यान,
सुखी बने जीवन पाते सच्चा ज्ञान.

निरोगी काया की खातिर योग करें,
सब मिल लोगों को जागरूक करें.

"गुरु तुझे सलाम" कार्यक्रम में विद्यार्थियों के विचार

लेखक- हेमंत खुटे

शिक्षक अपने ज्ञान और अनुभव से जो सिखाते हैं, वह अनमोल धरोहर है.

छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रारंभ किए गए ऑनलाइन कार्यक्रम" गुरु तुझे सलाम" के अंतर्गत पिथौरा विकासखंड स्तरीय कार्यक्रम में स्कूली विद्यार्थियों ने अपने विचारों को "अहा! मोमेंट" में साझा किया.

शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल पिरदा की कक्षा 11वीं में अध्ययनरत छात्रा सुषमा भोई ने ऑनलाइन कार्यक्रम के तहत दी जा रही शैक्षणिक व्यवस्था की सराहना की. उन्होंने इसे विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी बताया. साथ ही कहा कि ऑनलाइन कार्यक्रम केवल लॉकडाउन अवधि तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसका विस्तार करते हुए निरंतर जारी रखा जाए, जिससे शिक्षकों का संबंध विद्यार्थियों से अनवरत् बना रहे. शिक्षक अपने ज्ञान और अनुभव से जो सिखाते हैं वह अनमोल धरोहर है.

शासकीय हाई स्कूल बरनाईदादर के विद्यार्थी दिलीप नायक ने कहा कि-" शिक्षा प्रसार की दृष्टि से वर्चुअल क्लास बहुत उपयोगी है". विषय शिक्षकों द्वारा नई-नई तकनीकों का प्रयोग कर कार्यशालाएँ आयोजित की जा रही है जिनमें बच्चे रुचिपूर्वक भाग ले रहे हैं और अपनी जिज्ञासा प्रकट कर रहे हैं.

शासकीय प्राथमिक शाला रेमड़ा के छात्र पंचराम परमार ने कहा कि- "ऑनलाइन कार्यक्रम से ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों को बहुत कुछ नया सीखने को मिल रहा है. पाठ्यक्रम के अलावा अन्य ज्ञानवर्धक बातें इस कार्यक्रम के माध्यम से ज्ञात हो रही हैं.

शासकीय मिडिल स्कूल मेमरा के छात्र अभय यादव ने कहा कि-" यह ऑनलाइन कार्यक्रम शिक्षकों के अनुभव से लाभ उठाने का एक बेहतर अवसर है. शिक्षक अपने अनुभव से जो सिखाते हैं वह हमेशा ही अनुकरणीय होता है. शिक्षक ही हमारे भाग्य विधाता हैं.

शासकीय मिडिल स्कूल कसहीबाहरा की छात्रा जया पटेल ने कहा कि-" वर्चुअल क्लास से विविध विषयों में अच्छी-अच्छी जानकारियाँ मिल रही हैं. जब मैंने पहली बार ऑनलाइन कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक हेमन्त खुटे एवं सराईपाली ब्लॉक के शिक्षक यशवंत चौधरी से चर्चा की तो मुझे बहुत खुशी हुई. ऐसी ही नवीन एवं रुचिकर पद्धतियों से शिक्षा दिए जाने की जरूरत है.

इनके अलावा भूपेश नंद, धनीराम ठाकुर, प्रभुलाल नायक, जतिन यादव, पंचराम परमार, भारती बरिहा, रूपधर परमार, महेन्द्र किशोर पटेल ने भी अपने विचार रखे.

बी आर सी एफ ए नंद के मार्गदर्शन में आयोजित इस ऑनलाइन कार्यक्रम के सूत्रधार संकुल समन्वयक खगेश्वर डड़सेना थे.

उलान बाटी

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन 'माटी'

छत्तीसगढ़िया खाथे बासी
मनभावन हे इहाँ के माटी.

बचपन म खेलेन उलान बाटी
अउ खेलन हम भौंरा बाटी.

दाई बाबू मन खोजत राहय
धर के गजब जमगरहा लाठी.

खेलत- खेलत सुध भुलाये
चाबे हमला बड़का चाँटी.

जानवरों के नाम

रचनाकार- मनोज कश्यप

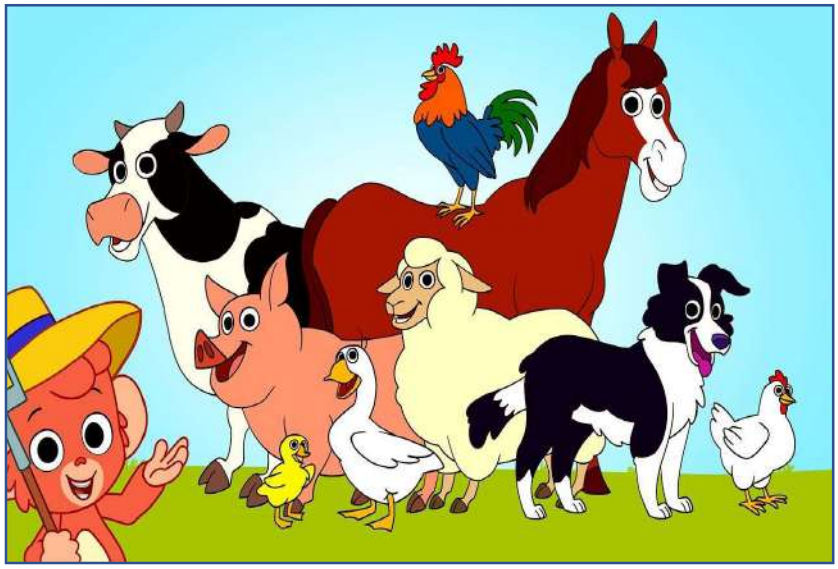

रैट मीन्स चूहा, कैट मीन्स बिल्ली,
चलते रहो बच्चों, है दूर अभी दिल्ली.
डंकी मीन्स गधा, मंकी मीन्स बंदर,
पढ़- लिख पार करो, ज्ञान का समंदर.

काउ मीन्स गाय, गोट मीन्स बकरी,
पढ़-लिख के खोलो, परहित की छतरी.
ऑक्स मीन्स बैल, एलिफेंट मीन्स हाथी,
ढूँढ़ा करो बच्चों, हमेशा अच्छे साथी.

डॉग मीन्स कुत्ता, बफैलो मीन्स भैंस,
काम जो आए तुम्हारे, उसे बोलो थैंक्स..

पिता

रचनाकार- नीरज त्यागी ग़ाज़ियाबाद

शाम ढले वो कुछ अलकसाया सा था.
दिन भर की थकन से मुरझाया सा था..

अजीब सी बेचैनी चेहरे पर तैर रही थी उसके.
जिम्मेदारियों से वो कभी भी ना घबराया था..

आज एक तरफ ही उसका ध्यान था.
बच्चे परेशां क्यों थे उसके वो हैरान था..

कभी अपने दर्द पर एक बार भी जो ना रोया था.
बच्चों के अन्जान दर्द पर वो आज बहुत रोया था..

अंकुरित करता रहा जीवन भर उनके लिए फसल.
भरी धूप में काम करने से वो कभी ना घबराया था..

अचानक उसकी रूह ने उसका साथ छोड़ दिया.
ऐसा क्या सुना जो दर्द से विकल हो बच्चों को छोड़ गया..

पास रखना ना चाहते थे बच्चें बीमार पिता को.
इसलिए उनकी खुशी के लिए उन्हें छोड़ गया था..

फल पृथ्वी पर क्यों गिरा?

लेखक-टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

बरसात का मौसम था.ठण्डी हवा चल रही थी. आकाश में काले बादल छाए हुए थे. शिखा और शिखर पत्थर मार-मार कर जामुन गिरा रहे थे. दोनों भाई-बहन कक्षा पाँचवीं के छात्र थे. विज्ञान के प्रति विशेष रूचि रखने वाला शिखर हरेक प्रश्न का जवाब किसी न किसी तरह ढूँढ़ ही लेता था. टहनी से टूटकर नीचे गिरते फल को देखकर उसके दिमाग में एक प्रश्न उठा कि आखिर यह फल पृथ्वी पर ही क्यों गिरा? इस प्रश्न का उत्तर पूछने वह तुरंत अपनी विज्ञान-शिक्षिका के घर चला गया.

'गुड आफ्टर नून मैम्' मोल्डेड चेयर पर बैठी रूबीना से शिखर हँसते हुए बोला. 'गुड आफ्टर नून शिखर, आओ बैठो, अरे क्या बात है? इतना क्यों हाँफ रहे हो तुम?' रूबीना मुस्कराते हुए बोली. शिखर स्टूल पर बैठकर थोड़ा सुस्ताने लगा. रूबीना ने एक गिलास पानी लाकर शिखर को दिया और बोली-'अच्छा शिखर, अब बताओ क्या बात है?'

शिखर ने अपने मन की पूरी बात रूबीना को बता दी. विज्ञान के प्रति शिखर की विशेष अभिरुचि देख रूबीना बहुत खुश हुई. मुस्कराते हुए बोली- 'शिखर, फल पेड़ से पृथ्वी पर इसलिए गिरा क्योंकि पृथ्वी हमेशा गुरुत्वाकर्षण बल से हर वस्तु को अपनी ओर खींचती है जामुन के फल पर भी पृथ्वी ने अपने गुरुत्वाकर्षण बल का प्रयोग किया और फल नीचे गिर गया.'

शिखर, रूबीना की बात ध्यान से सुन रहा था. फल के पृथ्वी पर गिरने का कारण उसकी समझ में आ गया. बोला-'मैं समझ गया मैम. अब मैं जाता हूँ, थैंक यू मैम!'

चिड़िया रानी

रचनाकार- विजय लक्ष्मी राव

चिड़िया रानी, चिड़िया रानी,
आओ बैठो, सुनो कहानी.
आँगन में मेरे तुम आ जाओ,
बिखरे दाने चुन- चुन खाओ.
फुदक-फुदककर नाचो- गाओ,
प्यास लगे तो पानी पियो.
स्वतंत्रता के गीत सुनाओ,
मुझको भी उड़ना सिखलाओ.

गुड़िया

रचनाकार- डॉ. अखिलेश शर्मा

नन्ही गुड़िया,
जादू की पुड़िया.
हँसती रहती,
हरदम बढ़िया..

गोल आँख मटकाती है,
हाथ-पैर पटकाती है.
चेहरे पर जो हाथ लगाओ,
गुस्सा खूब दिखाती है..

कविता, गीत, संगीत के माध्यम से शिक्षा में नवाचार

रचनाकार- हेमंत खूंटे

पिथौरा, छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रारंभ की गई अभिनव पहल पढ़ई तुंहर दुआर के अंतर्गत स्कूली विद्यार्थियों को वर्चुअल क्लास के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है. इस कार्यक्रम के अंतर्गत विषय विशेषज्ञों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया है. राज्य स्तर से लेकर ब्लॉक स्तर तक सतत् मॉनिटरिंग एवं विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है. इसी क्रम में शिक्षा गुणवत्ता और विभिन्न विषयों पर अभिरुचि जागृत करने के उद्देश्य से वर्चुअल क्लास के ब्लॉक मीडिया प्रभारी हेमन्त खुटे ने पाठ्य पुस्तक में शामिल चुनिंदा कविताओं को संकलित कर वर्चुअल क्लास के लिए विशेष रूप से तैयार किया है जिसमें देश भक्ति गीत डॉ हरिवंशराय बच्चन की कविता भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के,पर्यावरण गीत गंगा प्रसाद द्वारा लिखित दूँगी फूल कनेर के, देशभक्ति गीत सत्यनारायण लाल की उठो, नई किरण लिए जगा रही है नई उषा और मातृभूमि के प्रति समर्पित रामावतार त्यागी द्वारा रचित मन समर्पित,तन समर्पित और यह जीवन समर्पित. चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और दूँ का समावेश किया गया है. इन समस्त गीत, कविताओं को छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध गायक अनुराग शर्मा ने आवाज दी है तथा फ़िल्म निर्देशक व संगीतकार अमित प्रधान ने संगीतबद्ध किया है. उक्त कविताओं का संयोजन एवं संपादन हेमन्त खुटे ने किया है. हेमन्त ने बताया कि लॉकडाउन की अवधि में संचालित होने वाली वर्चुअल क्लास के महत्व सा बच्चों को अवगत कराने और विभिन्न विषयों में उन्हें दक्ष करने के लिए नवाचारों पहल के रूप में इसकी शुरुआत की गई है जिसके प्रेरणा स्रोत हिमांशु भारतीय सहायक संचालक महासमुंद है. इसी तरह अन्य गतिविधियों पर भी फोकस करने का निर्णय लिया गया है

जंकफूड

रचनाकार- सीमा गर्ग मंजरी, मेरठ

पिज्जा, बर्गर, गर्म समोसा,
भूख लगी तो पेट में ठूँसा.
स्वाद बढ़ाए जी ललचाये,
खाये बिन भी रहा न जाये..

टिंकू जी का मन ललचाया,
मैगी, चाउमीन, मोमो लाया.
ठूँस-ठूँस कर खूब खाया,
टिंकू जी का मन घबराया..

बर्गर, पिज्जा अधपके बासी,
खाके टिंकू को आई उबासी.
पेट पकड़ कर बाहर भागा,
जंक फूड ने हाजमा बिगाड़ा..

बार, बार संडास वो भागे,
नाक पकड़कर उल्टी लागे.
दस्त वमन से खुल गयी पोल,
टिंकू की हालत गोल मटोल..

छूटा पसीना चक्कर खाया,
मन ही मन टिंकू पछताया.
डॉक्टर को पापा ने दिखाया,
टिंकू को अस्पताल पहुँचाया..

सुबह शाम टीका लगवाया,
कड़वी दवा ने मुँह कड़वाया.
सुंई की चुभन से टिंकू रोया,
छुट्टी पाकर घर को आया..

घर वाले भी हुये परेशान,
नाहक इलाज पैसें बरबाद.
अस्पताल के चक्कर काटे,
रोते- रोते टिंकू घर लौटे..

कान पकड़कर टिंकू बोला,
जंक फूड से कर ली तौबा.
सब्जी, दाल रोटी खाऊँगा,
स्वस्थ और सेहतमंद रहूँगा..

अपने साथियों से भी कहूँगा,
जंकफूड अब खाने न दूँगा.
हमें ताजी दाल-रोटी खाना है,
पढना, लिखना, सेहतमंद रहना है..

पहेलियाँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

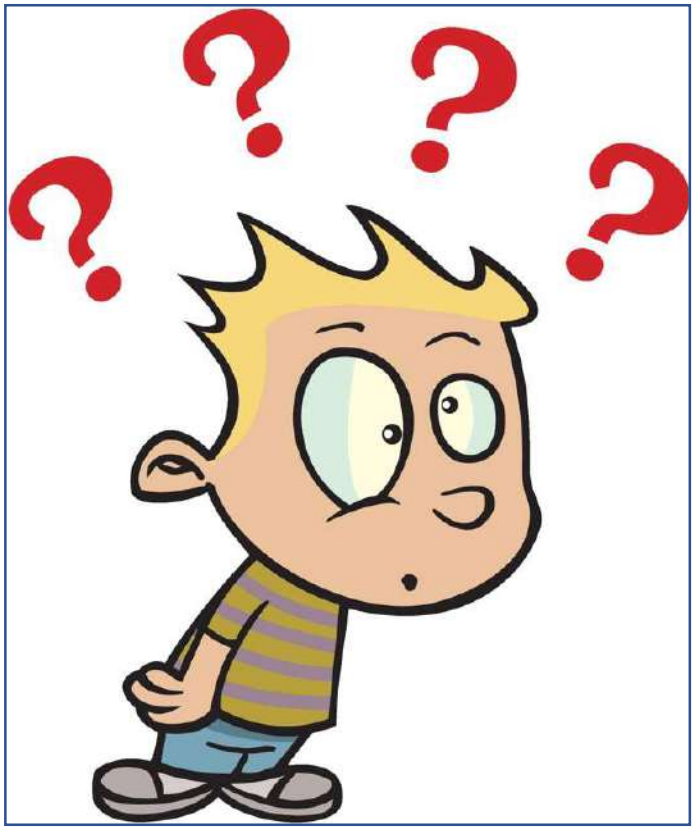

1.

सावन माह का उपहार है.
रिश्ते-नातों का आधार है.
भाई-बहन का प्यार है.
बूझो कौन- सा त्योहार है?

2.

दो नवराष्ट्रों का उद्‌गार हुआ.
स्वतंत्र भारत साकार हुआ.
हाँ, हाँ, बूझो, बूझो तो,
हमारा राष्ट्रीय त्योहार है?

3.

देह होती है चमकीली,
है वह जल की रानी.
उस सुंदर आँखों वाली से,
बनती नदी-ताल की कहानी.

4.

पूरी दुनिया में छा गई,
एक वैश्विक महामारी है.
है छोटा- सा वायरस,
बहुत गंभीर बीमारी है.

5.

धरती से बहुत ऊपर,
आसमान के खूब नीचे.
घड़े में पानी लेकर,
सभी ओर वो सींचे.

उत्तर :--- 1. रक्षाबंधन 2. स्वतंत्रता दिवस 3. मछली 4. कोरोना 5. बादल

पेड़ लगाव

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन 'माटी'

सबझन पेड़ लगाव जी, मीठा फल ला पाव जी.
जतन करव तुम रोज के, पानी डारव खोज के..

मिलही सब ला छाँव जी, सुंदर दिखही गाँव जी.
जरय नहीं तब पाँव जी, होही तुँहरे नाँव जी..

कउवाँ करही काँव जी, चिरई चिरगुन चाँव जी.
पहुना आही गाँव जी, सूरताही वो छाँव जी..

शुद्ध हवा ला पाव जी, जादा पेड़ लगाव जी.
ताजा फल ला खाव जी, पहिली पेड़ लगाव जी..

आईना

लेखक-सीमा गर्ग मंजरी

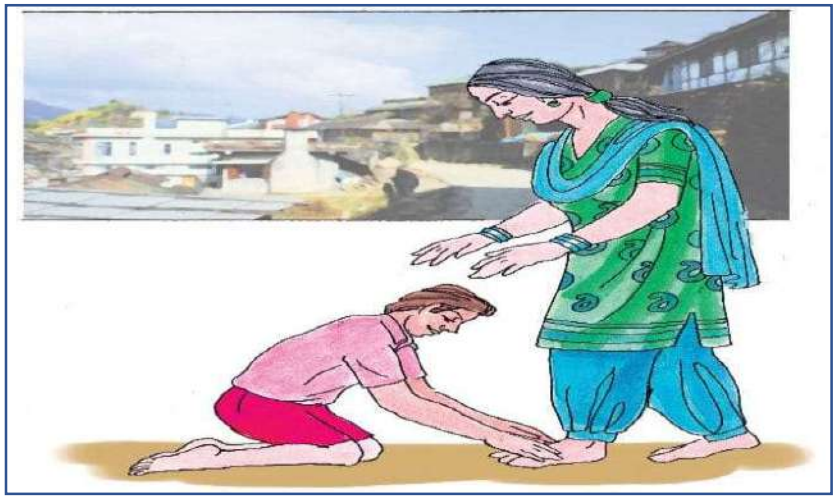

"माँ! थोड़ा- सा दलिया दादी माँ को भी दो, दादी माँ कमरे में अकेले पड़ी रोती रहती हैं. मैं उनके साथ ही बैठ कर खाऊँगा." नन्हें गोलू ने दलिये की कटोरी माँ के हाथ से पकड़ते हुए कहा.

"तू जाकर चुपचाप अपना दलिया खा. वरना अभी दो चार चपाट कान के नीचे बजा दूँगी. दादी माँ के गीत गाना भूल जायेगा." माँ ने क्रोध से चिल्लाकर कहा.

किंतु गोलू टस से मस नहीं हुआ. चुपचाप वहीं खड़ा रहा. बालमन की हट से मौन माँ ने मिट्टी के बर्तन में दलिया लेकर अपनी बीमार सासूजी को पकड़ा दिया. दादी माँ के दलिया खा चुकने पर नन्हा गोलू रसोईघर में मिट्टी से बने बर्तन धो रहा था.

"अरे गोलू तू यह क्या कर रहा है? इनको तो मैं बाहर कचरे में फेकूँगी, तू इन्हें हाथ मत लगा" माँ फिर से गोलू पर चिल्लाई.

मासूम गोलू ने भोलेपन से उत्तर देते हुए कहा कि- "माँ! अब से दादी माँ के सभी बर्तन मैं सम्भाल कर रखूँगा, क्योंकि जब आप दादी माँ जैसी हो जायेगी, तब मैं भी आपको इन्हीं बर्तनों में खाना दिया करूँगा."

माँ भौचक्की-सी होकर विस्फारित नेत्रों से गोलू को देखने लगी.नन्हें गोलू ने भविष्य का आइना दिखा दिया था. वह जैसे सोते से जाग उठी थी.

शिक्षा--जो बोओगे, वही काटोगे

कृष्ण लीला

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

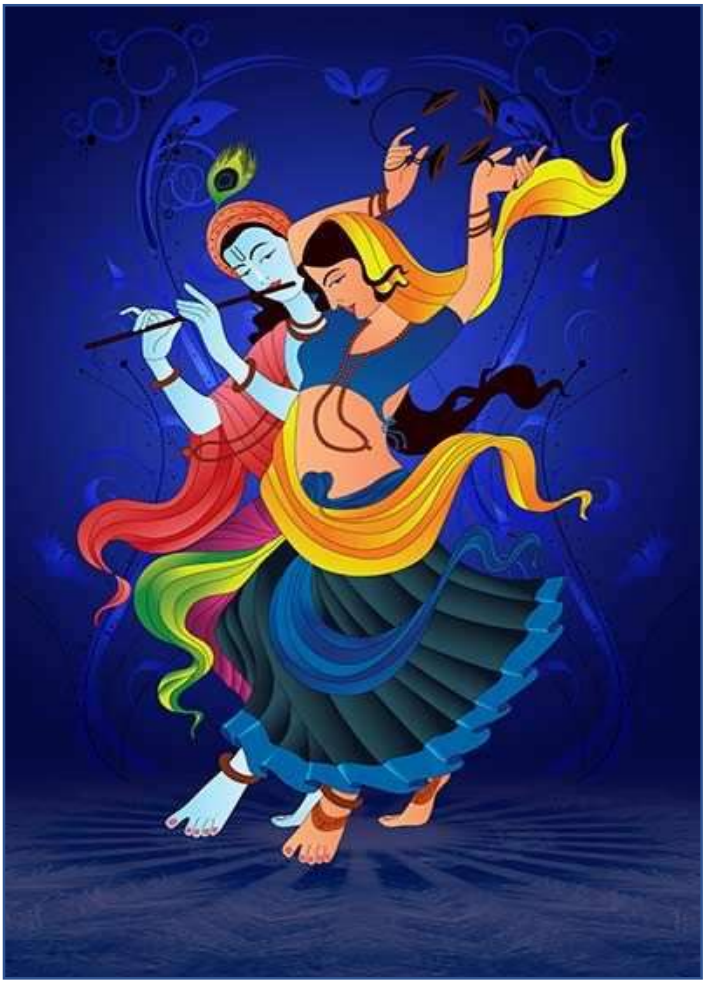

माखन मुख लिपटा हुआ, मैया पकड़े कान.
बालरूप में कृष्ण, पाते सभी का सम्मान..
बैठे कदंब के पेड़ पर, करे राधिका तंग.
सुनाते मुरली मधुर, बैठ गोपियों के संग..
कृष्ण प्रेम की बाँसुरी, है राधा के नाम.
पावन सच्चा प्रेम है, जैसे चारों धाम..
गीत प्रेम के गा रहे, सारे मिलकर आज.
दौड़ आई राधा, छोड़कर अपने काज..
धड़कन में है राधिका, नस-नस में है प्रीत.
वृंदावन गूँजता, कृष्ण का ही संगीत..

भोली-भाली राधिका, पनिया भरने जाय.
छेड़े मोहन राह में, गोपियाँ भी शरमाय..
राधा बैठी राह में, लिए कृष्ण की आस.
छलिया मन को छल गया, कैसे करूँ विश्वास..

शिक्षक

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

देकर शिक्षा करते राष्ट्र निर्माण,
पढ़ा-लिखाकर ज्ञानवान बनाते हैं.
भाग्य विधाता बनकर,
जीवन सँवार देते हैं..

अशिक्षा रूपी अंधकार भगा,
जीवन ज्योत जलाते हैं.
देकर सत्कर्म शिक्षा से,
जीवन मूल्य बढ़ाते हैं..

काँटों मध्य फूल सा हमको,
हँसना भी सिखाते हैं.
अच्छे विचारों को भरकर,
जीवन जीने की पाठ पढ़ाते हैं..

निरक्षर से साक्षर करने की,
प्रतिपल राह दिखाते हैं.
उन्नति पथ पर चलाकर,
जीवन गढ़ते जाते हैं..

कर्तव्यनिष्ठ होते शिक्षक,
बच्चे को सर्वोत्तम देते हैं.
वेद- पुराण की बात बताकर,
जीवन धन्य कर जाते हैं..

आम

रचनाकार- अतुल पाठक, हाथरस, उ.प्र.

फलों का राजा होता आम,
चूसो बढ़िया लगता आम.

सबके मन को भाता आम,
पीला बड़ा रसीला आम.

लकड़ी और फल आता काम,
पूजा में भी चढ़ता आम.

छायादार वृक्ष है आम,
नीचे बैठकर मिलता आराम.

इसके रस के कई है नाम,
कितना चोखा मीठा आम.

चोरी करना बुरी बात है

लेखक-हेमंत कुमार यादव, कक्षा-सातवीं, नवोदय विद्यालय कुरुद, धमतरी

मोनू नाम का एक लड़का था. वह बहुत लालची था. स्कूल में मोनू छात्रों के टिफिन से भोजन चुराकर खा जाता था. छात्रों को यह पता नहीं चल पा रहा था कि टिफिन से खाना कौन चोरी करता है. छात्रों ने हेडमास्टर से भी शिकायत की लेकिन चोर का पता नहीं चल पाया. स्कूल के सभी छात्र छात्राएँ बहुत परेशान हो गए थे.

एक दिन सभी छात्र छात्राओं ने चोर को पकड़ने के लिए एक तरकीब सोची.सभी छात्र छात्राओं ने चूहे पकड़ने का फंदा अपने-अपने स्कूलबैग में रख दिया. मोनू ने मौका पाकर आज फिर से चोरी करने की कोशिश की पर स्कूलबैग के अंदर हाथ डालते ही फंदा उसके हाथ में चिपक गया. अब मोनू जोर-जोर से बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगा. मोनू की आवाज सुनकर सभी छात्र-छात्राएँ दौड़कर आए और उसके हाथ से फंदे को निकाला. इस तरह मोनू चोरी करते हुए पकड़ा गया और उसे सभी के सामने शर्मिंदा होना पड़ा. मोनू ने सभी छात्र छात्राओं से माफ़ी माँगी एवं भविष्य में कभी चोरी नहीं करने का संकल्प लिया.

शिक्षा- कभी भी चोरी नहीं करनी चाहिए. चोरी करना बुरी बात है.

तितली

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

रंग- बिरंगी प्यारी तितली,
सबके मन को भाती है.
छूने की अगर कोशिश करो तो,
दूर गगन में उड़ जाती है..

फूलों का रस चूस- चूसकर,
भोजन अपना बनाती हैं.
परिश्रम का फल मीठा होता है,
यह पाठ हमें सिखलाती हैं..

अपनी अनेक अठखेलियों से,
बच्चों को खूब लुभाती हैं.
झुंड में उड़ती तितलियाँ,
एकता का पाठ पढ़ाती हैं..

बच्चें हो या बड़े,
सबके मन को भाती है.
जब खुले गगन से उड़ते हुए,
हमारे पास आती है..

जीवन आयु कम होने पर भी,
बेफिक्र जीवन जीती है.
क्षणभंगुर यह मोह- माया है,
अमर नही कोई प्रीति है.

जब तक जियो सुकर्म करो,
छल- कपट से दूर रहो,
ये सब ज्ञान बताती है,
प्यारी तितली सबके मन को भाती है.

काश मैं भी तितली होती,
खुले नभ में जी भर जीती.
जीवन कितना प्यारा होता,
सबसे जुदा और न्यारा होता.

मोह-माया ही पास न होती,
इच्छाओं की आस न होती.
चाहतें कोई अधूरी न होती,
काश मैं भी तितली होती..

माँ

रचनाकार- अविनाश तिवारी

माँ मंदिर की आरती,
मस्जिद की अजान है.
माँ वेदों की मूल ऋचाएँ,
बाइबिल और कुरान है.

माँ है मरियम मेरी जैसी,
माँ में दिखे खुदाई है.
माँ में नूर ईश्वर का,
रब ही माँ में समाई है.

माँ आंगन की तुलसी जैसी,
सुन्दर ईक पुरवाई है.
माँ त्याग की मूरत जैसी,
माँ ही पन्ना धाई है..

माँ ही आदि शक्ति भवानी,
सृष्टि का श्रोत है,
माँ ग्रन्थों की मूल आत्मा,
गीता का श्लोक है.

माँ नदी की निर्मल जलधार
पर्वत की ऊंचाई है,
माँ में बसे हैं काशी, गंगा,
मन की ये गहराई है.

माँ ही मेरा धर्म है समझो,
माँ ही चारों धाम है.
माँ चन्दा की शीतल चाँदनी
ईश्वर का वरदान है.

मेरा स्कूल

रचनाकार- लुकेश ध्रुव

बहुत याद आता है मुझे मेरा स्कूल और उसकी की यादें
ओ प्रार्थना स्थल पर राष्ट्रगान
माँ भारती की महिमा बखान.
माँ सरस्वती की स्तुति वंदना
ज्ञान प्राप्ति के लिए पूजा अर्चना.
बहुत याद आता है मुझे मेरा स्कूल और स्कूल की यादें
वो समूह के बीच सुविचार कहना
भक्ति,नीति पर अनमोल वचन कहना.
अनुशासन और ज्ञान की बातें सीखना
गुरुओं की आज्ञा का पालन करना.
बहुत याद आता है मुझे मेरा स्कूल और स्कूल की यादें.

गुल्लक

रचनाकार- मीनाक्षी सुकुमारन, नोएडा

बचपन से ही माता पिता ने कुछ ऐसा किया कि रिया और उसके छोटे भाई को दो गुल्लक दिए. फिर हर महीने बैंक का एक व्यक्ति आता और इकट्ठे हुए पैसे दोनों के खाते में जमा कर देता. दोनों भाई-बहनों का इतना उत्साह होता कि एक- दूसरे से अधिक पैसे जोड़ने में दोनों में होड़ लगी रहती.

जब दोनों बड़े हो गए और वे बैंक के पासबुक में जमा राशि देखकर सोच में डूब गए. इतने पैसे तो इकट्ठे नहीं होते थे गुल्लक में. तभी माँ ने बताया कि ये सिर्फ़ एक तरीका था तुम दोनों को बचत करना सिखाने के लिए. आपके पापा भी साथ में कुछ राशि डाल देते थे, आप दोनों की जमा राशि के साथ ताकि बड़े होने पर आपके काम आए. माँ की बात सुनकर दोनों ही अपने बचपन के गुल्लक को निहारने लगे और मन ही मन अपने माता पिता को धन्यवाद दिया, जिन्होंने गुल्लक के बहाने उन्हें पैसे बचाना और जोड़ना सिखाया. उन्होंने यह प्रण किया कि यही आदत वह अपने बच्चों में भी विकसित करेंगे ताकि वे भी इसकी महत्ता को जान सकें.

सच ही है छोटी- छोटी बातें जीवन में कितने बड़े सबक दे जाती हैं. जैसे- **यह छोटा - सा गुल्लक.**

भारत माता

रचनाकार- अजय कुमार यादव

आज भारत माता वीरों तुमको पुकार रही है,
दुश्मन की गोली तुमको ललकार रही है..
इस मिट्टी की खुशबू अब तुमको पुकार रही है,
हे, सिंहों सुनो भारत माता तुमको चीत्कार रही है..
उठाओ अपने हथियार तुम दुश्मन का संहार करो,
रणभेदी की गूँज दुश्मन देश की सीमा के पार करों.

वसुंधरा आज फिर से तुमको पुकार रही है,
तुम फिर अपने पौरुष का जौहर दिखलाओं,
किस्साअपनी वीरता का तुम सच कर दिखलाओं..
वीर हो तुम इस भूमि के अपना पौरुष दिखला दो,
दुश्मन को आज उसी के ज़मीन में दफना दो.

आज वीरों भारत माता तुमको पुकार रही है,
दुश्मन की गोली तुमको ललकार रही है..

अपने देश की शान हरगिज़ ना जाने पाए,
चाहे भले ही अपनी जान चली जाए.
हमने हमेशा अपनी छाती पर गोलियाँ खाई है,
लड़ते-लड़ते ही हमने वीरगति पाई है.
वीरों ने यह धरती अपने बलिदानों से सींची है,
दुश्मन पर सबने अपनी भृकुटी खींची है..

हमने साथ उसके दोस्ती का हाथ बढ़ाया था,
उसने हमारी पीठ पर धोखे से खंजर उतार दिया था.
छोड़ दी हमने गुलामी अब इन मक्कारों की,
हमने भी तैयारी कर ली है अब हथियारों की.
है दिली तमन्ना अब हम तुमको सबक सिखाएंगे.
भारत को अब हम आत्मनिर्भर बनाएंगे..

पढ़ किसान

रचनाकार- वीरेंद्र कुमार साहू

लिख किसाऩ पढ़ किसान
नवा तकनीक गढ़ किसान.
हरीयर कर दाई के कोरा
जम्मो के कोठी भर किसान.

पढ़- लिख के हमू मन ह
सैनिक बन जाबोन
सीमा मा दुश्मन के आगू
छाती अपन अड़ाबोन.

लिख किसान पढ़ किसान
नवा रद्दा गढ़ किसान.

पढ़ लिख के आगू बढ़ के
अलख हम जगाबोन
अक्षर ला हथियार बना के
दुनिया में नाम कमाबोन.

तँहू हर लिख-पढ़ किसान
दुख दुनिया के हर किसान.

हम बच्चे

रचनाकार- विजय लक्ष्मी राव

हम बच्चे स्वतंत्र देश के,
हर बाधाओं से टकराएँगे.
भारत माँ के आँगन में,
प्यार के फूल खिलाएँगे.
हम बात बड़ों का मानेंगे,
पढ़-लिखकर जग को जानेंगे.
मानव सेवा का प्रण लेकर,
विश्वास के दीप जलाएँगे.
भूखों को मिल जाए रोटी,
ऐसा कुछ कर दिखाएँगे.
मानव-मानव में भेद मिटाकर,
निज देश का नाम बढ़ाएँगे.

घड़ी

रचनाकार- टेकराम ध्रुव 'दिनेश'

बड़े काम की चीज घड़ी,
समय हमें बताती है.
रोज सुबह घंटी बजा कर,
हम सबको जगाती है..

सुबह नहाने- खाने का,
ध्यान हमें दिलाती है.
सुबह- सुबह स्कूल जाने का,
समय हमें बताती है..

बिगड़ जाती है ये जिस दिन,
समय जान नहीं पाते हैं.
उस दिन स्कूल समय पर,
हम पहुँच नहीं पाते हैं..

मास्टरजी की खट्टी- मीठी,
डांट भी खानी पड़ती है.
समय की अहमहियत समझो,
कितनों की किस्मत यह गढ़ती है..

सफलता की कहानी :-श्रीराम यालम की ललक

लेखक- गौतम कुमार शर्मा

छात्र का नाम- श्रीराम यालम
शाला का नाम- शासकीय प्राथमिक शाला भोपालपट्टनम

छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के बीजापुर जिले का विकासखण्ड भोपालपट्टनम नक्सलगढ़ और एक पिछड़ा पहुँचविहिन क्षेत्र के रूप प्रख्यात है. इस क्षेत्र में नक्सलियों ने कई बार बहुत सारे स्कूलों को ध्वस्त कर दिया है, इसके बावजूद भी यहाँ शिक्षा की अलख जगी हुई हैं.

हम आपको इस क्षेत्र के एक ऐसे बच्चे की कहानी बताने जा रहे हैं, जिसमें पढ़ाई के प्रति गजब का ललक और उत्साह है. उसके अंदर की इसी ललक और उत्साह ने उसे हमारे छत्तीसगढ़ का नन्हा नायक बना दिया है. वह बच्चा है शासकीय प्राथमिक शाला भोपालपट्टनम का कक्षा पाँचवी का छात्र श्रीराम यालम.

श्रीराम यालम एक गरीब परिवार के सदस्य है. इनके पिताजी स्वर्गीय श्री बोरैया यालम विगत वर्ष इस दुनियाँ से चल बसे, परिवार के एकमात्र कमाऊं सदस्य के गुजर जाने के कारण पूरे परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा, ऐसे में अधिकांश लोग टूट जाते है, लेकिन श्रीराम यालम की माताजी श्रीमती सुजाता यालम मुसीबतों से हार नहीं मानी और वो सभी मुसीबतों का डटकर सामना करते हुए अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए कड़ी मेहनत करती है, पर वह अपने बच्चों के सामने चेहरे पर शिकन भी नहीं आने देती. दिनभर की मेहनत

मजदूरी के बाद सुजाता रात में श्रीराम को साहस, बहादुरी व परिश्रम से जुड़ी प्रेरक कहानियाँ सुनाती हैं, ये कहानियाँ सुजाता ने कहीं सुने नहीं बल्कि वो खुद ही इन कहानियों को गढ़ती है, ताकि श्रीराम के अंदर अच्छे संस्कार का अभ्युदय कर सकें.

श्रीराम यालम में भी पढ़ाई को लेकर गजब का उत्साह हैं. कोरोना वायरस के कारण जब विद्यालय की छुट्टी हो गई, तो वे बहुत मायूस हो गये. फिर जब एक दिन उनके शिक्षक ने उन्हें लॉकडाउन में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा शुरू किये गये ऑनलाइन पढ़ाई हेतु स्कूल शिक्षा विभाग की वेबसाईट http://cgschool.in "पढ़ई तुंहर दुआर" के बारें में बताया, तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा. "पढ़ई तुंहर दुआर" के ऑनलाइन क्लास के बारे में जानकर उनकी उत्सुकता और बढ़ गई और श्रीराम ने तुरंत अपने घर के की-पेड मोबाईल से वेबसाईट पर अपने शिक्षक के सहयोग से अपना पंजीयन कराया, फिर उसने अपने की-पेड मोबाइल पर वेबसाईट पर उपलब्ध पाठ्य सामग्री से पढ़ाई करना शुरू किया, लेकिन की-पेड मोबाइल से वेबसाईट पर उपलब्ध सामग्री से पढ़ने में थोड़ी परेशानी हो रही थी, परन्तु श्रीराम यालम के अंदर की पढ़ाई के ललक के कारण वे वर्चुअल क्लास एवं वेबसाइट में उपलब्ध सामग्री को देखने के लिए गाँव में ही रहने वाले स्कूल के शिक्षकों के पास प्रतिदिन जाकर उनके मोबाइल से पढ़ने लगे.

श्रीराम यालम के पढ़ाई के प्रति ऐसी ललक और उत्साह के बारें में जब बीजापुर जिले के कलेक्टर श्री रितेश कुमार अग्रवाल को लगी, तो उन्होंने दिनाँक 12/06/2020 को श्रीराम की पढ़ाई सुचारू रूप से जारी रखने के लिए तत्काल एक स्मार्टफोन प्रदाय किया, जिसे पाकर वो खुशी से झूम उठे.

DEAR MOM

Poetess- Valentina Masih

I remember when I was a kid,
enjoying and sleeping were the only things I did,
I had no worries that made me sad,
you gave me all that a child would ever need,
your previous time, love, care and the Mother's heed.,
Now as I grow it's your love that makes me glow,
Together we lived, laughed, played and sometimes fought,
but I remember it was only you who made me believe in divine
and not in worldly things of mine...
Heaven is very small as it resides in your eyes,
there is always a hidden truth in all your lies.
After facing life I realised it's no bed of roses to survive,
but I wonder how with you it was easy to be alive and full of life.
Mother the seed you sowed is growing into a beautiful flower,
it's just because of your blessings that you shower!
Mom I promise to stay under your arms forever,
as I know that you would betray me never...
I love u more than the water in the ocean and the stars in the sky
and will continue after life even if I die... Love you MAA!!!

तिरंगे की शान

रचनाकार- प्रतिभा त्रिपाठी

तिरंगा लहरा रे.....
भारत माँ की शान तिरंगा, हम सब की है जान तिरंगा.
मान तिरंगा,शान तिरंगा, घर-घर में फहराना है.
अपनी है पहचान तिरंगा, सबको ये समझाना है.
तिरंगा लहरा रे.....
ना झुका है, ना झुकेगा, ये तिरंगा मस्ती में उड़ेगा.
भारत माँ का लाल तिरंगा, अंबर में फहराएगा.
सीने में भरकर देशभक्ति, राष्ट्रगीत हम गाएँगे.
तिरंगा लहरा रे.....
तिरंगे के तीन रंग को, अपने जीवन में भरना है.
केसरिया रंग साहस का, श्वेत रंग सच्चाई का,
हरा रंग समृद्धि लाता, घर-घर में हरियाली लाता.
तिरंगे की शान में अपनी, जान हमें गँवानी है.
तिरंगा लहरा रे.....
तिरंगा लहरा रे.....

गुरु

रचनाकार- अविनाश तिवारी

गुरु से गौरव गुरु से गुरुत्व,
गुरु ही ज्ञान गुरु से मान है.
गुरु घटाघोप अंधकार में,
प्रज्जवलित दिव्य प्रकाश हैं.
गुरु वर्षा तपित भूमि पर,
मेघ और उल्लास हैं.
गुरु सचेतक मार्गदर्शक,
ह्रदय में बसा विश्वाश है.
गुरु वेद का हर शब्द गीता,
की प्रवाहित गूंज है.
गुरु अपरिमेय व्याख्यानों सा,
दिव्य किरण पुंज है.
सामर्थ्य गुरु में सागर सा,
गरल को भी अमिय करता है.
तम को स्वयं स्वीकार वह,

भविष्य हमारा गढ़ता है.
गुरु माता- पिता है जीवन है,
गुरु ही अक्ष विधाता है.
गुरु स्वरूप ईश्वर का,
गुरु युग का निर्माता है.

लगन

लेखक-नीलम राकेश, लखनऊ, उत्तर-प्रदेश

एक गाँव में मोहन नाम का एक लड़का रहता था. पढ़ाई के लिये उसे पास के कस्बे के एक स्कूल जाना पड़ता था. एक दिन खेल शिक्षक ने बच्चों से कहा "जो बच्चे तैराकी सीखना चाहते हैं, वे अपना नाम लिखवा दें."

मोहन ने भी अन्य बच्चों के साथ अपना नाम लिखवा दिया. अगले दिन से सभी बच्चे तैराकी सीखने लगे. मोहन अपने पैर सही तरीके से नहीं चला पा रहा था. अतः वह बार-बार पानी के अन्दर चला जाता. टीचर उसे निकाल कर लाते.अन्य बच्चे उस पर हँस रहे थे. उसे टीचर की डाँट भी सुननी पड़ी. धीरे-धीरे, लगातार प्रयास से उसे तैरना आ गया. परन्तु स्कूल की तैराकी टीम में उसका चयन नहीं हो सका.

दुखी होकर घर जाते हुए मोहन की नजर अपने गाँव के तालाब पर पडी और उसने निश्चय कर लिया कि हँसने वालों के सामने वह अपनी योग्यता साबित करके दिखाएगा.

प्रतियोगिता वाले दिन मोहन को तैराकी में भाग लेता देखकर उसके संगी साथी मुस्कुराये किन्तु मोहन शांत बना रहा. प्रतियोगिता के आरम्भ होते ही सभी लोग आश्चर्य चकित रह गये. मोहन अन्य प्रतियोगियों से बहुत आगे चल रहा था. उसकी योग्यता और क्षमता देख कर सब दंग

थे. इस प्रतियोगिता में तो मोहन प्रथम आया ही, उसका चयन प्रदेश की तैराकी टीम के लिये भी हो गया.

मोहन के साथियों ने खुशी से उसे कन्धों पर उठा लिया. जो अब तक उस पर हँसते थे, मोहन आज उन्हीं का हीरो बन गया था. तालियों की गड़गड़ाहट गूँज रही थी. खेल शिक्षक ने आ कर मोहन को गले लगा लिया और बोले, ''मोहन तुम्हारी लगन और मेहनत का फल आज सबके सामने है.''

मोहन आज बहुत खुश था उसकी सच्ची लगन ने उसका सपना सच कर दिया था.

सावन आगे

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

सावन आगे, सावन आगे
घपटत करिया बादर आगे.
झमाझम बरसत हे पानी
चुहत हावै खपरा छानी
चौरा म अब बइठे- बइठे
बबा करत हावै सियानी
खोर- गली म पूरा आगे
तरिया, नदिया लबलबागे.
सावन आगे, सावन आगे.

घर-दुवार सब किचिर-काचर
लइका खेलै छिपिर-छापर
छुप- छुप के पानी म नाचै
बबा घलो रमायन बाचै
बुढ़ुवा मन के मुँह चिकनागे
खेत-खार जम्मो हरियागे
सावन आगे, सावन आगे.

मिलजुल करमा-सुआ गावै
ददरिया मा राग लमावै
कमरा-खुरमी ला ओढ़ के
चरवाहा ह बाँस बजावै
खेतहारिन कुलकत हावै
दुख-पीरा जम्मो बिसरागे
सावन आगे, सावन आगे.

स्कूल

रचनाकार- तेजेश साहू

स्कूल तो है ज्ञान का मंदिर,
शिक्षा का वरदान है.
सभी बच्चे हैं स्कूल जाते,
मिलता अच्छा ज्ञान हैं..

सोनू, मोनू, चिन्नी, मिन्नी,
रामू,श्यामू और है बिन्नी.
सभी बच्चे हैं स्कूल जाते,
शिक्षा का वरदान पाते..

सबसे पहले प्रार्थना करते,
कक्षा की ओर प्रस्थान करते.
फिर शिक्षक कक्षा में जाते,
इंसान रूपी भगवान ये होते..

पहले वे बच्चों को पढ़ाते,
साथ में शिष्टाचार सिखाते.
गृहकार्य भी बच्चों को देते,
उनका हर पल मनोबल बढ़ाते..

कम्प्यूटर

रचनाकार- तेजेश साहू

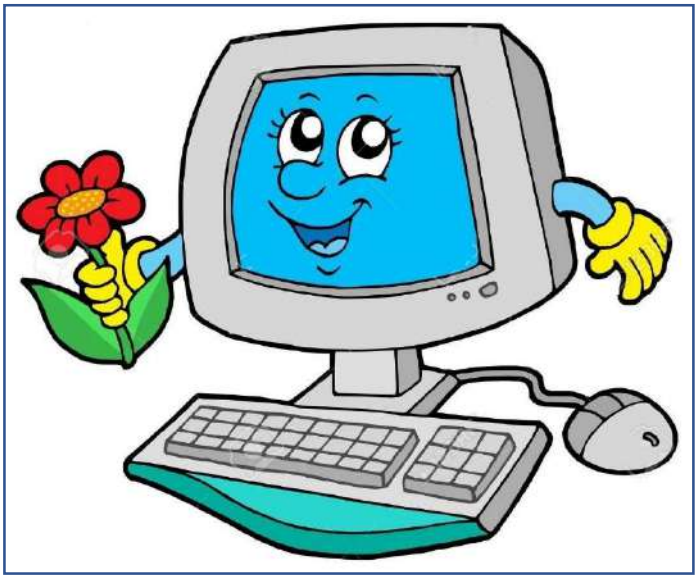

एक दिन मोनू ने पूछा,
कम्प्यूटर से एक सवाल
ये सब कठिन-कठिन काम करके,
कैसे मचा देते हो बवाल?

फिर कम्प्यूटर ने मोनू से बोला,
है मुझे ऐसा वरदान,
सभी काम मैं झट से कर देता,
इसलिए है कंप्यूटर मेरा नाम.

मुझमें ऐसे सॉफ्टवेयर हैं,
जो मुझको देते काम करने की एनर्जी,
कुछ भी तुम कर सकते हो मुझमें,
जो चाहे हो तुम्हारी मर्ज़ी.

कुछ साथी भी हैं मेरे,
मेरी सहायता करना है उनका काम.
जो करते हर समस्या का समाधान,
कीबोर्ड, माउस, सीपीयू हैं जिनके नाम.

मुझमें चलती इंटरनेट भी
बहुत सारी GB का स्टोरेज भी है.
मुझमें ऐसी जान हैं,
इसलिए कम्प्यूटर मेरा नाम है.

सीपीयू को कहते मेरा दिमाग है,
क्योंकि इसमें पूरा मेरा संसार है.
मुझे ऐसा वरदान है,
इसलिए कम्प्यूटर मेरा नाम है.

मानसिक स्वास्थ्य का जीवन में महत्व

लेखक- रीता गिरी

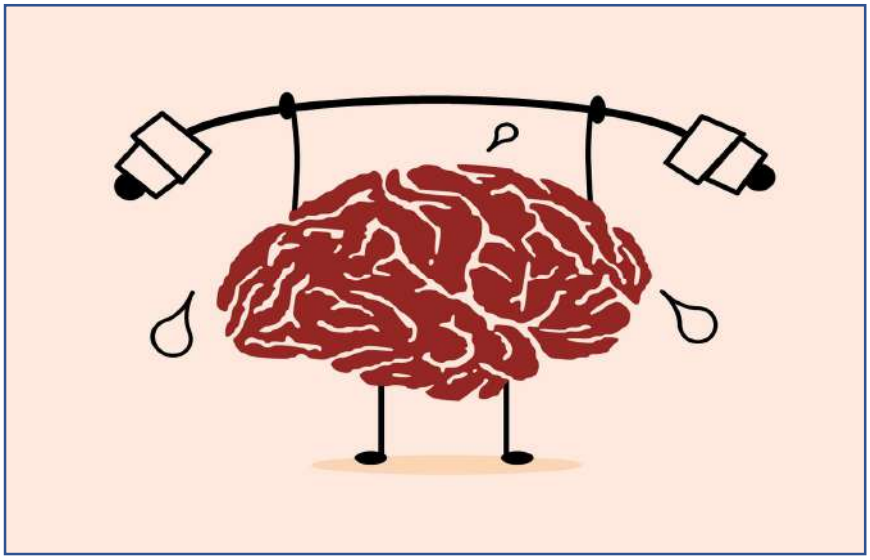

स्वस्थ शरीर मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी होती है. स्वस्थ होने का अर्थ केवल रोगमुक्त जीवन ही नही बल्कि पूरी तरह से फिट होना भी है और इस लक्ष्य को हम संतुलित आहार, व्यायाम, आराम, तनाव मुक्ति और मनोरंजन से प्राप्त कर सकते हैं. सुविधासंपन्न होने के बाद भी यदि मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो समझिए कि उसके पास कुछ भी नहीं है.

सभी जीवों का स्वास्थ्य उनके आस-पास के वातावरण पर निर्भर करता है. हमारा सामाजिक वातावरण हमारे व्यक्तिगत स्वास्थ्य का महत्त्वपूर्ण अंग है. स्वस्थ रहने के लिए खुश रहना आवश्यक है. व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए सामाजिक समानता और सद्भाव महत्त्वपूर्ण है.

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ भावनात्मक, मानसिक तथा सामाजिक संपन्नता है. किसी व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य वह किस प्रकार सोचता है, महसूस करता है या व्यवहार करता है, को प्रभावित करता है तथा उसके जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रभाव डालता है.

आज के युग ने मनुष्य को निराशावादी बना दिया है. गंभीरता, एकाग्रता तथा सहृदयता आदि गुण कोसों दूर हो गये है और उनका स्थान भावुकता, छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजना और उदर पूर्ति की चिंता ने ले लिया है.

वर्तमान युग चुनौतियों और प्रतिस्पर्धाओ का युग है. जीवन की आपाधापी और तेज रफ्तार ने मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य को बहुत अधिक प्रभावित किया है. चिंताग्रस्त होकर लोग मानसिक विकारों से ग्रस्त हो रहे हैं. आधुनिकता की चकाचौंध ने लोगों के सोचने-समझने की

क्षमता क्षीण कर दी है जिससे लोग जीवन में सही निर्णय लेने की स्थिति में नहीं है और नकारात्मकता के शिकार हो रहे हैं. अवसादग्रस्त होने के कारण बहुत से लोग आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं.

पुरानी कहावत है- "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत". अर्थात् मन (मानसिक स्वास्थ्य) की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है, अगर व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा तो वह शरीर से कितना भी स्वस्थ हो, उसे अच्छा महसूस नहीं होगा.उसे अपने जीवन में घर, व्यवसाय व परिवार जैसी बहुत सी जिम्मेदारियाँ निभाने तथा उनके बीच संतुलन बनाए रखने में मुश्किल होगी. जैसे हमने कई बार सुना है कि धन से संपन्न या अच्छी नौकरी वाला व्यक्ति भी आत्महत्या जैसे गलत कदम उठा लेता है, परिवार तक टूट जाते हैं.

जीवन में खुशी, प्रेरणा, संतुष्टि व मनोबल का होना बहुत जरूरी है और इन सबका संबंध हमारे मानसिक स्वास्थ्य से ही है. अतः हमें में सदैव अच्छे विचार और सकारात्मक सोच रखनी चाहिए. खुद को अपने बच्चों के साथ रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखें.योग व मेडिटेशन करें. अच्छी दिनचर्या का पालन करें. परिवार के साथ खुशनुमा समय व्यतीत करें. सकारात्मकता और हौसला बनाए रखें, तनाव मुक्त रहें, एक-दूसरे का सहयोग करें. आवश्यकता पड़ने पर काउंसलर अथवा मनोरोग चिकित्सक की सहायता लें.

मानसिक स्वास्थ्य का एकमात्र साधन है- मन पर अधिकार प्राप्त करना एवं उसे शक्तिशाली बनाना. मानसिक स्वास्थ्य का जीवन में अत्यधिक महत्व है. कार्यकुशलता, सफलता, पारिवारिक सामंजस्य, सामाजिक स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विघटन से बचाव, समस्या समाधान की क्षमता, सृजनात्मकता, व्यवहार कुशलता, नैतिकता, आत्मबोध, व्यक्तित्व विकास, देश की उन्नति में भूमिका इन सभी के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक है. मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति सांवेगिक एवं भावनात्मक रूप से परिपक्व होते हैं. वे अपने संवेगो एवं दूसरों के हृदय के भावों को भली-भांति समझते हैं एवं इसके कारण उनमें आपराधिक प्रवृत्ति नही होती है.

मानसिक स्वास्थ्य ठीक होने पर व्यक्ति मन, मस्तिष्क और इंद्रियों के बीच तालमेल बैठा पाता है जिससे वह अपना कार्य कुशलतापूर्वक करता है. मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए योगदान दे सकता है. अगर हम अपने जीवन को संतुलित, खुशनुमा व सफल बनाये रखना चाहते हैं तो मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा.

सुग्घर हावौं मैं गाँव रे

रचनाकार- तुलस चंद्राकर

मया-पिरित के धार बोहावत
घेरी-बेरी गोहरांव रे
गुरतुर बोली-भाखा जेखर
सुग्घर हावौं मैं गांव रे.

मोर चिन्हारी धुर्रा-माटी
चिखला, छानही-परवा हे
डोली-धनहा, मुही-पार अउ
तरिया, डबरा, नरवा हे
अंतस ल जुड़वाथे जिहाँ
रुख-राई के छाँव रे
गुरतुर बोली-भाखा जेखर
सुग्घर हावौं मैं गाँव रे

मोर अंगना म अटकन-बटकन
रेंहचुल, भंवरा-बाँटी हे
गिल्ली-डंडा अउ फुगड़ी

खेल जम्मो खाँटी हे
बरसत पानी, छिपिर-छाप,
लइका चलाथे नाव रे
गुरतुर बोली-भाखा जेखर
सुग्घर हावौं मैं गांव रे.

होत बिहनिया चले नगरिहा
जाँगर टोर कमावत हे
खेत मा चटनी-बासी के संग
ज़िनगी ल अपन पहावत हे
धरती दाई के जतन करइया
जेखर पखारन पाँव रे
गुरतुर बोली-भाखा जेखर
सुग्घर हावौं मैं गांव रे.

मोर अंगना म किसम-किसम के
तीज-तिहार मनावत हें
ठेठरी-खुरमी, बरा-सोंहारी
खावत अउ खवावत हें
कोरा हे मोर सरग बरोबर
जग हर लेथे नाँव रे.
गुरतुर बोली-भाखा जेखर
सुग्घर हावौं मैं गाँव रे

दुब्बर-पातर मनखे के संग
हावय मोर मितानी
चैतू, मंगलू अउ बैसाखू
करथे इहाँ सियानी
दया- मया संग रहिथन मिलजुल
करन नहीं काँव-काँव रे
गुरतुर बोली-भाखा जेखर
सुग्घर हावौं मैं गाँव रे

मेरा भारत देश महान है

रचनाकार- खेमराज साहू "राजन"

मेरा प्यारा-प्यारा जहान है,
वो मेरा प्यारा हिंदुस्तान है.
मेरा देश जहाँ राम की महिमा,
कृष्ण की बंसी की तान है.
गौतम, गाँधी की सत्य अहिंसा,
यही हमारी भूमी की शान है.
मेरा प्यारा-प्यारा जहान है,
मेरा भारत देश महान है.

गाथा बलिदानों और अमर शहीदों की,
फिर भी मेरे धरती की गोद निहाल है.
मेरे देश की धूल, मिट्टी भी,
वीर सपूतों के फूल और गुलाल हैं.
मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर में बँटा,
अलग-अलग धर्मों के भगवान हैं.

मेरा प्यारा-प्यारा जहान है,
मेरा भारत देश महान है.

हिन्दू प्यारा है, मुस्लिम प्यारा है,
संत श्री गुरु ग्रन्थ साहिब न्यारा है.
बौद्ध, जैन और ईसाई देश की जान है,
यही अखंड भारत के अखंड एकता की पहचान है.
मेरा प्यारा-प्यारा जहान है,
मेरा भारत देश महान है.

ईद प्यारा है, क्रिसमस प्यारा है,
बैसाखी का भंगड़ा न्यारा है.
प्यारा दिवाली का दीपदान है.
मेरा प्यारा-प्यारा जहान है,
मेरा भारत देश महान है.

फिर भी अनेकता में एकता,
सभ्यता और संस्कृति की पहचान है.
क्योंकि मेरा प्यारा हिंदुस्तान है.
हरी-भरी साड़ी में लिपटा,
छतरी जैसा ऊपर नील वितान है.
सभी में प्यार, धीरज, सहानुभूति,
ऐसा स्वर्ग जहान हिंदुस्तान है.
मेरा प्यारा-प्यारा जहान है,
मेरा भारत देश महान है.

बीते पल ना भूले मन

रचनाकार- नीरज त्यागी, ग़ाज़ियाबाद

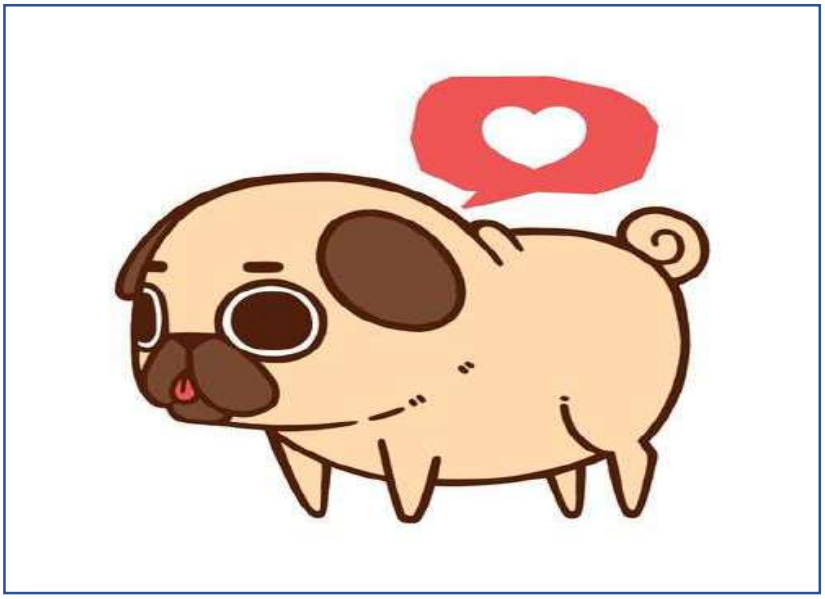

कहाँ कोई किसी को हमेशा याद रखता है.
साथ है जब तक,बस तभी तक हाथ मिलता है..

ये कुछ लम्हें, जिनका साथ आज तुझको मिलता है.
तपती धूप में कुछ पल, बारिश में भीगने सा लगता है..

चलते- चलते कभी भी किसी के पैर नहीं थकते है.
छूट जाता है जब किसी का साथ,ये तभी दुखते है..

ना जाने बीते हुए पलों में कितने रिश्ते छूटते गए.
परेशान वही है,जिसके मन के पटल पर वो रुकते गए..

हर अगले पल कोई पुराना दोस्त छूटता चला गया.
तेरा ही मन भावुक था, जो टूटता चला गया..

प्रकृति का प्यार

रचनाकार- अजय कुमार यादव

देखो बारिश का मौसम आया है,
हर तरफ कोहरा ही छाया है.
कुदरत ने करिश्मा दिखाया है,
इसकी छटा बहुत ही निराली है.
मेरे तन और मन को भिगाया है,
देखो सावन का महीना आया है..

खेतों में नई फसल उग आयी है,
किसान की मेहनत रंग लाई है.
पक्षी की कलरव सुनाई दे रही है,
फूलों पर कलियाँ खिल आई है.
देखो बारिश का मौसम आया है,
हर तरफ कोहरा ही छाया है..

देती है सभी को अनमोल उपहार,
ममतामयी रूप है इसमें साकार.
जीवन को आनंदमयी बनाती है,
हमारा जीवन सरल बनाती है.
देखो बारिश का मौसम आया है,
हर तरफ कोहरा ही छाया है..

साहसी बच्चे

लेखक-तेजेश साहू

एक समय की बात है. गोलूपुर नामक गाँव में हीरा नाम का एक ईमानदार व्यापारी रहता था. उसके दो बच्चे थे. दोनों पढ़ाई में बहुत होशियार थे. बड़े का नाम राम और छोटे का नाम श्याम था.दोनों भाई कभी भी आपस मे लड़ते-झगड़ते नहीं थे. दोनों एक साथ स्कूल जाते. एक साथ घर आते और एक साथ अपना गृहकार्य भी पूरा करते थे. यह देखकर हीरा बहुत खुश था. हीरा की पत्नी घर पर रहकर घर और बच्चों की देखभाल करती थी.

एक दिन गाँव मे एक नया व्यापारी आया. वह बहुत अमीर था. वह व्यापारी गाँव की धर्मशाला में रुका हुआ था.एक रात को चोरो का एक गिरोह उस व्यापारी को लूटने की योजना बना रहा था. चोरों की बातचीत राम और श्याम ने सुन ली. दोनों ने यह बात अपने पिता को बताई तो उनके पिता जी घबरा गए और दोनों से चुपचाप रहने को कहा परंतु राम और श्याम के मन में वही बात चल रही थी. उन्होंने अपने पिता जी को समझाया कि वे भी तो एक व्यापारी हैं यदि किसी दिन उनको भी ऐसे ही किसी दूसरे गाँव में रुकना पड़ा और उनके पास कोई कीमती सामान हुआ और कोई उनकी मदद न करें तो अच्छा नहीं होगा. यह बात हीरा की समझ में आ गई. उसे अपने दोनों बेटों पर गर्व होने लगा.

उन तीनों ने पुलिस थाने जाकर पुलिस को सारी बात बता दी. पुलिस ने उन तीनों को शाबाशी दी. पुलिस ने बताया कि उन्हें भी इस गिरोह की तलाश है इस गिरोह पर 5 लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया है.

उसी रात पुलिस का दल धर्मशाला में उस गिरोह को पकड़ने गया पुलिस के साथ वे तीनों भी गए. जैसे ही चोरों का गिरोह वहाँ पहुँचा, पुलिस ने उन्हें धर-दबोचा. लेकिन उनमें से एक चोर ने राम को अपने कब्जे में ले लिया. परंतु राम और श्याम भी कुछ कम होशियार नहीं थे. श्याम ने घर से अपने साथ मिर्ची पाउडर रख लिया था. उस चोर ने राम के बदले अपने साथियों को छोड़ने की माँग की परंतु पुलिस ने उन्हें नहीं छोड़ा. श्याम ने मौका पाते ही उस चोर की आँखों में मिर्ची पाउडर डाल दिया. जिससे हड़बड़ाकर चोर ने राम को छोड़ दिया. फिर श्याम ने धर्मशाला में पड़ी एक रस्सी से चोर को बाँध दिया. शोर सुनकर धर्मशाला में रुके हुए अन्य लोग भी उठ गए और चोरों को पीटने लगे. पुलिस ने उन चोरों को हवालात में डाल दिया और 15 अगस्त को राम और श्याम को सम्मानित करने की बात कही और 5 लाख रुपये इनाम के भी दिए. इस तरह राम और श्याम ने साहसिक कार्य करके अपने माता-पिता का नाम रोशन किया. यह घटना समाचार पत्रों में भी छपी और दोनों की प्रशंसा होने लगी.

Memories and Rains

Poetess- Valentina Masih

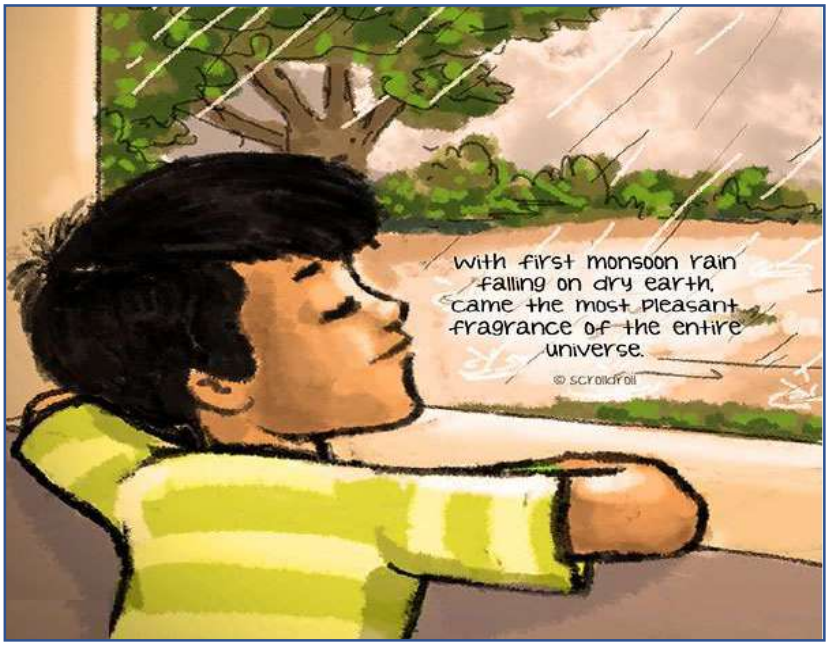

Down the memory lane,
I gently opened a commemorating tale,
There was a young girl,
prancing and dancing, chittering and chattering
And it was about to rain!

I remembered how much she liked the rain,
to feel the warmth of the air,
mixed with the earthly redolence,
The calmness with its soft embrace,
turning suddenly into a brawny rage!

The madness, the cheer,
the joy in the atmosphere,
with true essence of life and no despair,
The reason of blossom in every sphere,
Oh! I wonder how much she loved the rain...

Down the memory lane,
A souvenir so old,
but so precious that glitters like gold,
Oh! How much I miss the busy chirping street,
But now not a single sole to meet...

Oh! How much I miss to be in the open rain,
Friends roaming here and there without any rein,
But only the Corona virus surrounds the lonely lane,
And I am almost lost in this Social Distancing Reign
Just washing hands again and again!
Oh! How much I miss the Beautiful Rains...

राजा बेटा कहलाऊँगा

रचनाकार- प्रतिभा सिंह, केंद्रीय विद्यालय, कोलकाता

कॉपी, कलम, किताबें लेकर,
पापा मैं पढ़ने जाऊँगा.
बोलूँगा ना झूठ किसी से,
बनकर सच्चा दिखलाऊँगा.

नए-नए मित्रों संग मिलकर,
बड़े प्रेम से बतियाऊँगा.
टीचर जी की सब बातों को,
मैं जीवन में अपनाऊँगा.

छोटे भाई- बहनों को भी,
अच्छी बातें सिखलाऊँगा.
पढ़-लिख नाम करूँगा रोशन,
राजा बेटा कहलाऊँगा.

बरखा आई

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

छम-छम करती बरखा आई,
देखो आसमान में बदली छाई.

प्यासी धरती करे पुकार,
बरसो बादल करो श्रृंगार.

गरजता मेघ आसमान पर छाया,
मानो प्यास बुझाने धरती की आया.

बादल करता बरसात भारी,
धरती दिखती सुंदर और प्यारी.

देखो धरा लगे बड़ी न्यारी,
मानो ओढ़नी हो हरियारी.

चहुँओर धरा में छाई हरियाली,
जमकर हुई बारिश मतवाली.

पके आम टपके चहुँओर,
कोयल उड़ चली कहीं ओर.

रवि की किरणों को ठंडक पहुँचाई,
तपती धरती की प्यास बुझाई.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

हंस और उल्लू

एक समय की बात है. एक हंस तालाब के किनारे एक जंगल में रहता था. एक दिन एक उल्लू वहाँ पहुँचा. उल्लू खुद को दुनिया का सबसे सुंदर पक्षी समझता था.पर जब उसने हंस को देखा तो मन ही मन सोचने लगा-" अरे वाह! यह हंस कितना सुंदर है,शायद दुनिया का सबसे सुंदर पक्षी यही होगा इससे दोस्ती करनी चाहिए." यह सोचकर उल्लू ने हंस से कहा-तुम कितने सुंदर और विशाल हो. लगता है कि तुम दुनिया के सबसे सुंदर पक्षी हो. मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ.

हंस बोला- दोस्ती तो मैं कर लूँगा लेकिन मुझसे भी ज्यादा सुंदर तोता है. तोते के अलग-अलग रंग होते हैं उसकी आवाज भी बहुत मधुर होती है इसलिए मुझे लगता है तोता ही इस दुनिया का सबसे सुंदर पक्षी है. यह सुनकर उल्लू जंगल में तोते के पास जा पहुँचा, वहाँ तोता पेड़ पर बैठा हुआ था. उल्लू तोते से बोला-" तोता भैया तुम इस दुनिया के सबसे सुंदर पक्षी हो मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ."

तोता बोला-" भाई दोस्ती तो मैं कर लूँगा.लेकिन मुझसे भी सुंदर पक्षी मोर है. मोर रंग बिरंगे पंखों वाला पक्षी है इसलिए मुझे लगता है कि मोर ही इस दुनियां का सबसे सुंदर पक्षी है. तोते की बात सुनकर उल्लू मोर के पास गया और बोला-"मोर भैया क्या तुम ही दुनिया के सबसे सुंदर पक्षी हो? तुम तो सच मे बहुत सुंदर दिख रहे हो क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे?

यह सुनकर मोर ने कहा-"दोस्ती तो मैं तुमसे कर लूँगा लेकिन पहले मेरी बात सुनो. मेरी इसी सुंदरता के कारण मानव मुझे पिंजरे में बंद कर लेता है. मेरे पंख नोंचकर लोग बाजार में बेच देते हैं. मेरी सुंदरता ही मेरी सबसे बड़ी दुश्मन है. तुमने सुना ही होगा- जो अधिक गुणवान होते हैं उनके गुणों के कारण उनका ही नुकसान होता है जैसे मीठे गन्ने को कोल्हू में पेरा जाता है. ठीक इसी प्रकार हमारा हाल है. मुझे तो लगता है कि उल्लू भाई तुम ही इस दुनिया में सबसे सुखी पक्षी हो क्योंकि बिना डरे खुले आम घूम सकते हो,ईश्वर ने तुम्हे ऐसी नजर दी है कि तुम रात में भी सबकुछ देख सकते हो. मोर की यह बात सुनकर उल्लू खुश हो गया और वहाँ से खुशी-खुशी अपने घर लौट गया.

कु. श्रद्धा सुर्यवंशी, कक्षा आठवीं, शा.पू.मा.शाला, पंधी, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी

सच्ची मित्रता

जंगल में एक हंस रहता था. उसका कोई दोस्त नहीं था. हंस सोचता था कि काश मेरा भी कोई दोस्त होता तो कितना अच्छा होता! एक दिन बाद वहाँ एक उल्लू आया. हंस ने उल्लू से बातचीत की और कुछ ही देर में उनकी आपस में दोस्ती हो गई. उल्लू कुछ दिनों तक वहाँ रहा और जब मौसम बदला, गर्मी के दिन आए तो उस जगह को छोड़ कर चला गया. उल्लू के जाने के बाद हंस फिर अकेला हो गया उसे उल्लू की बहुत याद आती थी. हंस एक दिन उल्लू से मिलने गया. हंस को पहुँचते-पहुँचते रात हो गई. हंस रात को उल्लू के साथ ही रुक गया. रात को कुछ राहगीर आकर उसी पेड़ के नीचे विश्राम करने लगे. राहगीरों को वहाँ से भगाने के लिए उल्लू जोर जोर से चिल्लाने लगा. एक राहगीर को उल्लू का चिल्लाना अच्छा नहीं लगा इसलिए वह गुलेल से उल्लु को मारने की कोशिश करने लगा. पर उल्लू रात के समय देख पाते है इसलिए उल्लू ने अपने आप को तो बचा ही लिया साथ ही उसने हंस को भी पत्थरों से बचाया.

जान बचाने के लिए हंस ने अपने दोस्त उल्लू का शुक्रिया अदा किया और उनकी दोस्ती और भी पक्की हो गई. कुछ दिनों तक उल्लू के साथ रहने के बाद हंस अपने घर लौट आया. बाद में भी दोनों दोस्त एक दुसरे से मिलने मौसम के अनुसार आते जाते रहते थे.

कु. सुनीता साव कक्षा ग्यारहवीं, शास.उ.माध्य.शाला सांकरा, महासमुंद द्वारा भेजी गई कहानी

उल्लू और हंस की दोस्ती

एक जंगल था. उस जंगल में एक तालाब था. उस तालाब के किनारे एक हंस रहता था. उसी तालाब के किनारे एक बहुत बड़ा सा पेड़ था. एक दिन वहाँ एक उल्लू आया और उस पेड़ पर बैठकर नीचे देखने लगा. नीचे तालाब में एक हंस को देखकर उल्लू बहुत खुश हुआ. उसने सोचा कि अब वह यहीं रहेगा. उल्लू ने हंस से दोस्ती करनी चाही. पर हंस ने उल्लू को बताया कि यह तालाब गर्मी के दिनों में सूख जाता है तो बेहतर यही होगा कि वह अपने रहने के लिए कोई दूसरी जगह ढूँढ ले. पर उल्लू वहाँ से नहीं गया, क्योंकि वह जगह उसे बहुत ही शांत और आरामदायक लगी. अब हंस भी खुश हो गया क्योंकि उसे एक दोस्त मिल गया था. वे दोनों खुशी-खुशी वहाँ रहने लगे.

गर्मियों के दिन आने लगे और तालाब का पानी धीरे-धीरे सूखने लगा. उल्लू को अब वहाँ रहना बहुत मुश्किल लगने लगा. हंस भी पानी के बिना परेशान हो गया था. एक दिन हंस ने उल्लू से कहा कि वह उसकी चिंता न करके किसी पानी वाली जगह पर चला जाए. पर उल्लू नहीं माना. उसने हंस से कहा “दोस्त जीयेंगे साथ में और मरेंगे भी साथ में. उल्लू की बात सुनकर हंस को अपनी दोस्ती पर गर्व हुआ. उसने उल्लू को अपनी पीठ पर बिठाया और वे दोनों उड़ चले एक नई जगह की तलाश में.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

जीवन में शांति, मित्रता और पर्यावरणीय संतुलन

एक गाँव था. इस गाँव के लोगों का जीव -जंतुओ के प्रति व्यवहार बहुत क्रूर था. गाँव के निवासी जीव जंतुओं, पक्षियों का शिकार बनाने की फिराक में घूमते रहते थे. गाँव के लोग पेड़ों को भी बड़ी संख्या में काटते थे और अपनी जरूरतों को पूरा करते थे.

हुआ यूँ कि एक दिन गाँव का एक आदमी बीमार पड़ गया उसे डॉक्टर के पास ले जाया जा रहा था तभी रास्ते में एक बुजूर्ग ने नसीहत दी कि आपको यह बीमारी आपकी अपनी करतूतों की वजह से हुई है जिसका परिणाम आपके साथ ही और लोग भी भुगतेंगे. यह सुनकर बीमार आदमी काफी आहत हुआ और उसने ठान लिया कि अब पर्यावरण की संतुलन हेतु कारगर कदम उठाने की जरुरत है. डॉक्टर के पास से लौटकर उसने ग्रामीणों की एक बैठक बुलाई और पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन के लिए जागरुक होकर कार्य करने जीव-जंतुओं की रक्षा करने पर सभी की सहमति हुई. बस फिर क्या था! देखते ही देखते गाँव की तस्वीर बदल गई लोगों की सोच में बदलाव आया जिसका वातावरण पर असर दिखने लगा. अब गाँव के तालाब का पानी निर्मल स्वच्छ हो गया,पेड़ों में नई जान आ गई. इसी बीच उल्लू और हंस के बीच तालाब के पास मित्रता हुई और आपस में खूब सारी बातें हुई. उल्लू ने कहा- देखो फूल भी अब मुस्कुराना लगे हैं और सारा पर्यावरण खिल उठा है. अब गाँव में स्वच्छ वातावरण,पर्यावरण सुधार के साथ शांति,समभाव और सहयोग की लहर उमड़ चली थी. अब गाँव में मानव और जीव-जंतुओं के बीच सौहार्द्रपूर्ण वातावरण निर्मित हो गया है. पक्षियों,जीव जंतुओं की उलझी हुई जिंदगी सुलझ गई है. लोगों को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास होने का नतीजा है कि यह सब कुछ हुआ.

इसका दूरगामी प्रभाव यह हुआ कि नई पीढ़ी भी अब गाँव को समृद्ध बना रहे हैं.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

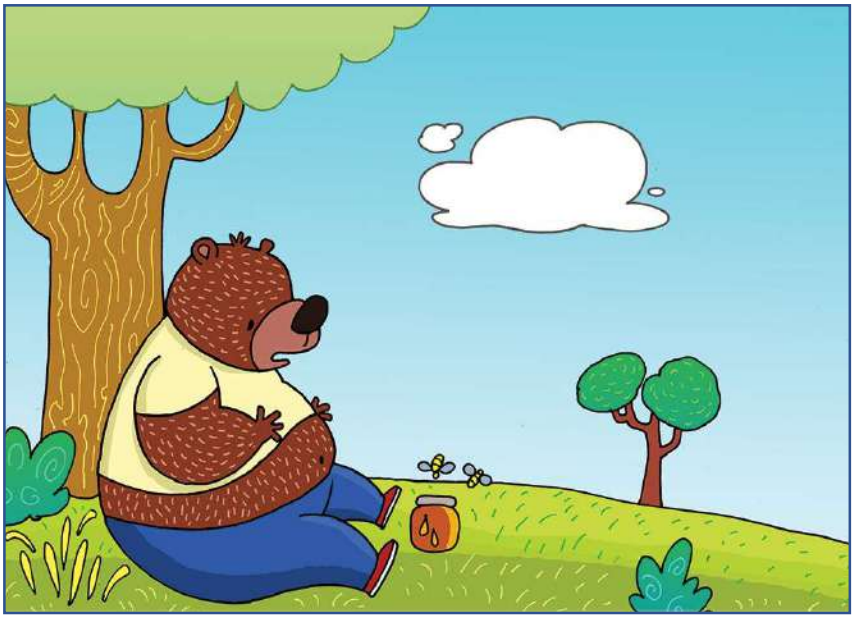

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों में से सबसे अच्छी कहानी को किलोल पत्रिका के मुद्रित वर्शन में जगह देंगे एवं अन्य कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

घण्टी बाजे

रचनाकार- अविनाश तिवारी

ठीन-ठीन,ठीन घण्टी बाजे
होगे स्कूल के बेरा
चल रामू बस्ता धर के
तँहू चल ना मनटोरा.

ज्ञान के उजयारी बगराबो
अंधियारी ल मिटाबो
नोनी बाबू पढ़ लिख के
नवा बिहनिया लाबो.

गांव-गाँव मा नोनी बाबू
गजब लिखत-पढ़त हे
नवा जुग मा नवा-नवा
रद्दा घलो गढ़त हे.

शिक्षा के अधिकार हर भैया
नवा सुराज लावत हे
भारत के भुइँया मा देख ले
सरग नवा बनात हे.

तब मिली आजादी

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

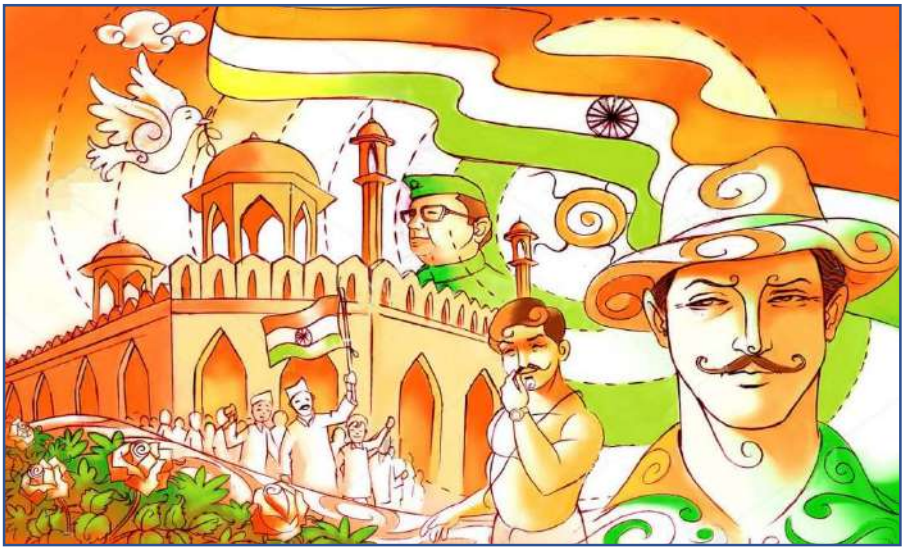

आबाद होने को जब हुई बर्बादी, देश को तब मिली आजादी..
दो सौ वर्षों तक, देश रहा गुलाम.
छिनी शांति लोगों की, जीना हुआ हराम.
सन् सत्तावन ने जब आग लगा दी, देश को तब मिली आजादी..

माथे से पसीना टपका, खून गिरा सीने से.
मौत तो बेहतर है, घुट-घुट के जीने से..
यह बात जब सबने फैला दी, देश को.तब मिली आजादी..

कश्मीर से कन्याकुमारी, बंगाल से राजस्थान.
जंग छिड़ा देश भर, संकट में पड़ा सम्मान..
बहनों ने जब अपनी मांग मिटा दी, देश को तब मिली आजादी..

सोने की चिड़ियॉ को बचाने, गांधी-तिलक मिट गये.
विजयपथ के माला खातिर, कई जीवन धागे टूट गये..
इंकलाब का स्वर हुआ उन्मादी, देश को तब मिली आजादी..

अभिनंदन करोना योद्धा

रचनाकार- अविनाश तिवारी

निकल पड़ा योद्धा सामने अदृश्य शैतान है.
करोना से लड़ रहा वो इंसान नही भगवान है.

जिसने कर जीवन समर्पित इंसानियत को बचाया है.
धन्य-धन्य धन्वन्तरि आपने विश्व को बचाया है.

कर्तव्य चिकित्सक सेवापथ का विश्राम को नही स्वीकारा है.
संकट की इस कठिन घड़ी में हिम्मत कभी न हारा हैं.

अभिनन्दन सफाई कर्मियों का जो स्वच्छ भारत कर रहे हैं.
लड़ रहे जो अभावों में भी स्वस्थ जन को कर रहे हैं.

तेरा समर्पण दधीचि सा है कर्तव्य तेरा रूहानी है.
प्राण अर्पण देश हित में ये देवदूत आसमानी हैं.

हो सुरक्षा में खड़े निरन्तर आपदा में हाथ बढ़ाया है.
आभार में सारे हिंदुस्तानी ने सजदे में सर को झुकाया है.

अभिनन्दन है योद्धाओं तुमको विविध तुम्हारे स्वरूप हैं.
पोलिस, चिकित्सक या हो सफाई कर्मी सभी मित्र रूप हैं.

हरियाली और पेड़

रचनाकार- श्वेता तिवारी

प्रकृति ने हमारे उपयोग के लिए फलता फूलता वनस्पति जगत बनाया है. वनस्पति जगत का कोई भी पेड़ पौधा ऐसा नहीं है जो हमारे काम का न हो. कई पेड़ पौधे हमें फल देते हैं तो कई फूल देते हैं. कुछ पेड़ पौधे हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं. स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले पेड़ पौधों में तुलसी और नीम बहुत उपयोगी हैं. तुलसी का पौधा लगभग हर घर में पाया जाता है. जब हमें सर्दी जुकाम हो जाता है तो काली मिर्च के साथ तुलसी की पत्तियां घोंटकर पीने से सर्दी जुकाम दूर हो जाता है. तुलसी की पत्तियों में रोग के कीटाणुओं को दूर करने की शक्ति होती है इसलिए भगवान के प्रसाद में भी तुलसी दल डाले जाते हैं. घरों में महिलाएँ स्नान करने के बाद तुलसी के पौधों में नियम से जल चढ़ाती हैं और इसे तुलसी माता कह कर पुकारते हैं. इस गुणकारी पौधे को हरा भरा रखना अपना धर्म मानती हैं और इसकी पूजा करती हैं. अभी करोना काल में बहुत सारी औषधियाँ हमें पेड़ पौधों से ही प्राप्त हो रही हैं जो हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में बहुत लाभकारी सिद्ध हो रही हैं. तुलसी में इतने औषधीय गुण हैं कि इसके उपयोग द्वारा हम शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को काफी हद तक बढ़ाकर कोरोना वायरस विषाणु का सामना करने में सक्षम हो सकते हैं. विभिन्न प्रकार की भाजियाँ भी हमें पौधों से प्राप्त होती है जो लौहतत्व से भरपूर होती हैं. नीम बहुत लाभदायक पेड़ है नीम का प्रत्येक भाग मनुष्य के काम का है. नीम की पत्तियों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो आसपास की वायु शुद्ध हो जाती है.इसकी नवीन कोपलों को चबाने या घोंटकर पीने से खून साफ होता है.नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर उस पानी से स्नान करने से

चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं. नीम के पानी से घाव धोने पर घाव के कीटाणु समाप्त हो जाते हैं. पत्तियों को उबालने आदि की परेशानी को कम करने के लिए नीम का साबुन भी बनाया जाने लगा है. नीम की पत्तियों को जलाकर विषैले कीटाणुओं और मच्छरों को दूर भगाया जाता है. नीम की पत्तियों को कपड़ों या अनाज के साथ रखने पर उन में कीड़े नहीं लगते. नीम की पतली टहनी दातुन के रूप में काम आती है टहनी का कड़वापन मसूड़ों के लिए लाभदायक होता है और कीटाणुओं को नष्ट करता है. नीम की जड़ें जमीन के अंदर से पानी खींच कर मिट्टी की ऊपरी परत को नाम रखती है तथा जल और वायु द्वारा मिट्टी के कटाव को रोकती हैं.

एलोवेरा(घृतकुमारी) त्वचा संबंधी रोगों के इलाज में उपयोगी होता है. बाल टूटने की समस्या में भी इसका उपयोग होता है इस कोरोना वायरस के समय में सबसे अधिक गिलोय का उपयोग किया जा रहा है. कोरोना वायरस के कारण गिलोय की महत्ता सामने आ रही है. गिलोय को इम्यूनिटी बूस्टर माना जाता है यह बुखार की बहुत अच्छी दवा है. पारस पीपल का उपयोग डिप्रेशन दूर करने के लिए होता है चंदन की तरह ही इसकी लकड़ी को घिसकर माथे पर लगाया जाता है.

अतः हम सबको यह प्रण करना चाहिए कि प्रत्येक वर्ष हम कम से कम एक पौधा जरूर लगाएँ और उसकी तब तक देखभाल करें जब तक कि वह पेड़ न बन जाए. कहा गया है वृक्ष है तो हम सब हैं.

अम्बर से आग बरसती

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित 'मलय'

तप्त तवे- सी धरती तपती.
अम्बर से है आग बरसती..
गली-गली चल रही शहर की.
कली-कली सूखी उपवन की..
साँय-साँय लू लपट लगाए.
तरु-छाया भी सिमट सुखाये..
पशु-पक्षी सब फिरें तड़पते.
इधर-उधर छाया को तकते..
सूखे पोखर-ताल-तलैया..
दिखती नहीं नदी में नैया..
वट-पीपल की छाँव सुहाती.
नीम-छाँव हर मन को भाती..

Alphabet C for 2020

Poetess- Valentina Masih

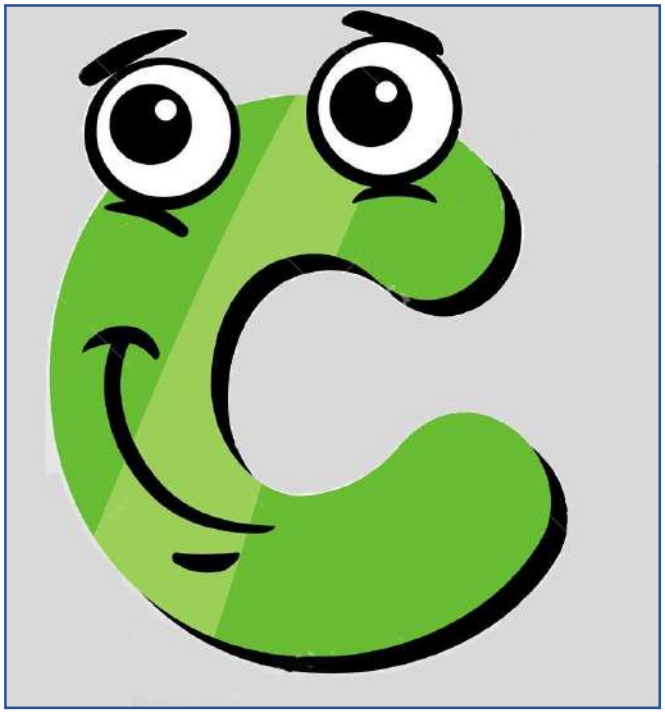

Did you ever noticed that the alphabet "C" has shot to prominence in this Covid-19 era?

See the Sea of Change that the alphabet C has brought!

No one expected that the alphabet "C" would play a Completely overwhelming role compared with any of the other alphabets...

Cough (C)
Cold (C)
Corona virus (C)
Covid-19 (C)
Case (C)
Confirmed (C)
Confinement (C)
Contamination (C)
Containment (C)
Curfew (C)
Two most serious "C"s are,
Cemetery (C)
Cremation (C)
The possible remedial drug is, Chloroquine (C)
The beauty is, it started from China (C)....
But at the same time,

GOD smiled, and said...
Cleanliness (is the remedy...)
Courage (is the need of the hour...)
Compliance to the expert advice...
Contention to overcome the crisis...
Clarity of thought...
Cooperation with the fellow beings...
Caring for the needy..
"Clearance" is awaited and in a Short while..
"Cure" is definitely going to "Come very soon".....
Till then take vitamin C.....
and finally....
"CALMDOWN yourself" is the only solution for all right now...
Stay Safe And Healthy... GOD BLESS ALL..

अच्छे इंसान बनो

रचनाकार- कन्याकुमारी पटेल

मेहनत से कुछ काम करो,
फल की आशा तुम ना करो.
हरदम तुम तैयार रहो,
हर दिन नई शुरुआत करो.
असफलता से कभी ना डरो,
नई ऊर्जा से शुरुआत करो.
अपने बड़ों का सम्मान करो,
छोटों को हमेशा प्यार करो.
परनिंदा को इनकार करो,
हर क्षण उपकार करो.
खुदको भाए वह व्यवहार करो,
हर रोज नए संस्कार भरो.
अभिमानी नहीं, स्वाभिमानी बनो,
स्वार्थी नहीं, स्वावलंबी बनो.
हर रोज प्रभु का नमस्कार करो,
कभी ना किसी का तिरस्कार करो.

सत्य कर्म का बीज बोकर,
मन से अच्छे इंसान बनो.
भले ना तुम धनवान बनो,
भले ना तुम पहलवान बनो.
लेकिन अच्छे इंसान बनो,
और सच्चे इंसान बनो.

स्वदेशी अपनाओ

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन 'माटी'

अपनी धरती अपनी माटी, इसको स्वर्ग बनाओ.
छोड़ विदेशी सामानों को अब, स्वदेशी अपनाओ..

चाइना सामान लेना छोड़ो, देता है वह धोखा.
चले नहीं वह दो दिन भी, हो जाता है खोखा..

ऐसे धोखेबाजों को तो, सबक सभी सीखाओ.
छोड़ विदेशी सामानों को अब, स्वदेशी अपनाओ..

नहीं किसी से डरते, हम हैं भारतवासी.
आँख दिखाये जो हमको, होगा सत्यानाशी..

नहीं चलेगा राग विदेशी, वंदे मातरम गाओ.
छोड़ विदेशी सामानों को अब, स्वदेशी अपनाओ..

एप्प चाइना का सब छोड़ो, भारत का अपनाओ.
नये नये तकनीक यहाँ भी, पैसा यहीं बचाओ..

करो घमंडी का सिर नीचा, उसको अभी झुकाओ.
छोड़ विदेशी सामानों को अब, स्वदेशी अपनाओ..

प्लास्टिक

रचनाकार- विजय लक्ष्मी राव

"प्लास्टिक" शब्द ग्रीक भाषा के 'प्लास्टी कोस' से बना है जिसका अर्थ होता है जो किसी आकार में ढल जाए या ढाला जा सके. जान डब्ल्यू हैमाट नामक एक प्रिंटर ने सन् 1870 में प्लास्टिक की खोज की थी.सन् 1940 में प्लास्टिक भारत आया और इसका प्रयोग सन् 1970 से औद्योगिक और घरेलू काम-काज हेतु किया जाने लगा. भारत में लगभग 40 प्रतिशत प्लास्टिक पुनर्प्रयोग में लाया जाता है. पुनः उपयोग में लाते समय इसमें ब्लीचिंग तथा रंगीन रसायन डाल दिया जाता है, जिससे ये सुंदर दिखे.

यह रासायनिक पदार्थ पानी में आसानी से घुल जाता है और पानी के साथ हमारे शरीर में जमा होकर गुर्दा तथा फेफड़ों को खराब कर देता है.

प्लास्टिक के रंगीन थैले जो सब्जी, मसाले या अन्य सामानों के साथ मिलते हैं, वे पुनर्प्रयोग वाले प्लास्टिक ही होते हैं. पुनर्प्रयोग वाला प्लास्टिक बहुत कम पूँजी में घरों या कारखानों में बनने वाला पदार्थ है.परन्तु यह बहुत हानिकारक है क्योंकि इससे साँस की कई खतरनाक बीमारियां उत्पन्न होती हैं.

अतः प्लास्टिक के रंगीन थैले का उपयोग न करें.

महामारी की पीड़ा

रचनाकार- कल्पना सिंह

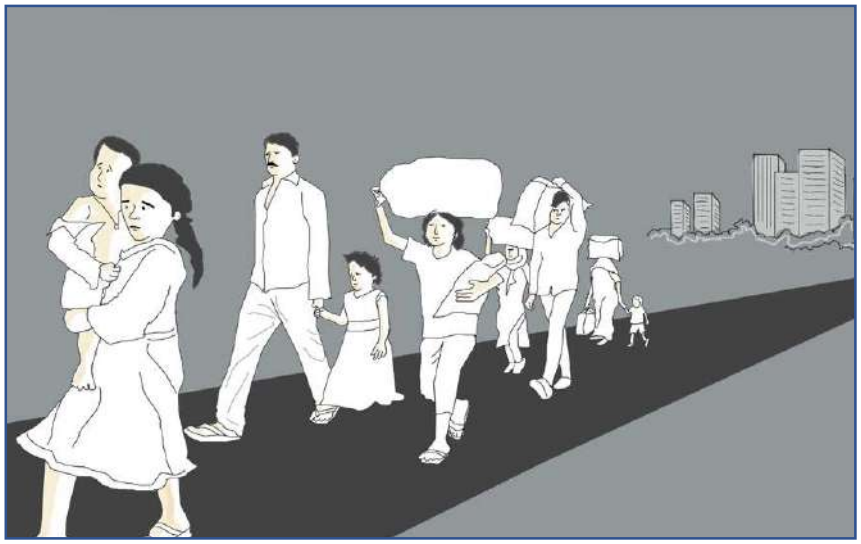

अपने सिर, कांधे, पीठ पर
उठाए गृहस्थी की गट्ठर,
न जाने कितने सारे लोग,
चलते चले जा रहे हैं,
तपते पथरीले पथ पर..

लिए अपने कांधे पर,
छोटे-छोटे प्यारे बच्चे,
न जाने कितने सारे लोग,
कदम-कदम बढ़ रहें,
झुलसाती राहों पर.

लिए लाल अपने गर्भ में,
थकी, भूखी, प्यासी माँयें
चलते-चलते अनवरत,
अनमनी जच्चा जन रहीं,
सुनसान कहीं सड़क पर.

किसी के बुढ़ापे की लाठी,
किसी की माँग का सिंदूर,
चाचा, ताऊ, पिता और बेटा,
मजबूर बेखबर बेबस लेटा,
लौहपथगामिनी के राह पर..

तुलसी

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन 'माटी'

घर अँगना अउ चउक मा, तुलसी पेड़ लगाव.
पूजा करके प्रेम से, पानी रोज चढ़ाव..

तुलसी हावय जेन घर, वो घर स्वर्ग समान.
रोग दोष सब दूर कर, घर मा लावय जान..

तुलसी पत्ता पीस के, काढा बने बनाव.
सरदी खाँसी रोग मा, खाली पेट पियाव..

तुलसी पत्ता टोर क, रोज बिहनिया खाव.
स्वस्थ रहय जी देंह ह, ताकत बहुते पाव..

तुलसी माला घेंच मा, पहिरय जे दिन रात.
मिटथे कतको रोग हा, कभू न होवय वात..

तुलसी पत्ता खाय जे, बाढ़य ओकर ज्ञान.
मन पवित्र हो जात हे, लगय पढ़य मा ध्यान..

तुलसी माला जाप कर, माता खुश हो जाय.
बाढ़य घर मा प्रेम जी, संकट कभू न आय..

माँ के हाथ की रोटी साग

रचनाकार- देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

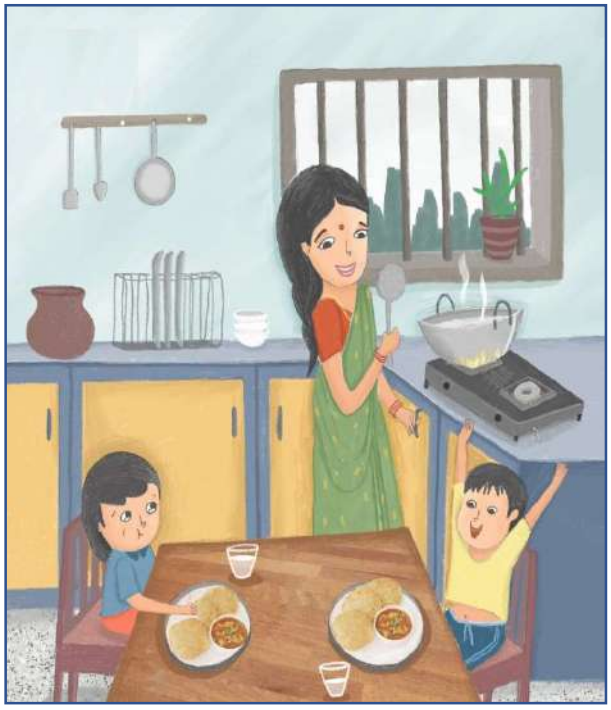

बचपन में माँ की बनाई रोटी साग,
घी संग रोटी खानी आती है याद.
महँगे होटल के लंच और डिनर में,
खाने में अब वो न मिलता स्वाद..

चौके में अपने ही पास बिठाकर,
माँ हाथों से प्रायः मुझे खिलाती.
गर्म दूध का ख़ूब बड़ा सा गिलास,
माँ झटपट ला कर मुझे पिलाती..

रूखी सूखी कुछ भी माँ देती,
खाकर संतुष्टि मुझे मिल जाती.
पनीर मटर चाइनीज व्यंजन से,
खाने में न वह अब तृप्ति होती..

पढ़ कर ज्यों मैं स्कूल से आता,
माँ पूछे, खाने के लिए क्या लाऊँ.
मैं दोस्तों संग खेल के चक्कर में,
बिन खाए अक्सर भग जाऊँ..

माँ के हाथों से बनी वो चटनी,
आम का हो मुरब्बा व अचार.
कढ़ी चावल व मटर की तहरी,
खाने में रहता माँ का प्यार..

वो बचपन की यादें हैं आती,
खाने में कितना मैं लापरवाह.
भूख लगे माँ बनाती झट से,
माँ करे मेरी कितनी परवाह..

Affinity

Writer- Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

'Who is there...Ok...I am just coming….'Jyoti heard that someone was knocking at the door. She came out and saw a couple with a baby. She said-'Yes.... What's the matter? Who are you all...? 'She continued.

'We are coming from Hyderabad. I was living there with my family as a worker in the paper factory. During the lockdown, the factory was locked. Now, I had the living problem. So, we are returning to our native place Pacheda. It's 52 kms away from here. 'Oh! You all are coming from there on foot and will go to your village so on. 'Jyoti was surprised.

'Yeah...'the man nodded his head-'We have to go on foot there. we are very thirsty and hungry. Please, give us some water and food. They sat there at the door.

Jyoti became very sad. She took them inside. Then Bhooshan, husband of Jyoti came at that time. Jyoti and Bhooshan not only provided some thing for eating; but kept them for some days at their home. They did the familiar behaviour with the labour and his family.

'At that time the labour with his family was feeling the affinity in his Chhattisgarh. He was proud of Chhattisgarh and to be a Chhattisgarhiya.

बेरोजगारी का डर

रचनाकार- नीरज त्यागी

शर्मा जी ने लगभग 35 साल नौकरी की और अपने मालिकों की सारी बातें सर झुका कर मानीं. वह जहाँ भी नौकरी करते उन्हें अपनी नोकरी जाने का डर बना रहता क्योंकि वे 12वीं कक्षा तक ही पढ़े लिखे थे. इसी कारण उन्हें कभी भी अच्छी नौकरी नहीं मिली और वे हमेशा अपने मालिकों की डाँट फटकार सुनते रहे.

उनका 25 वर्षीय बेटा राहुल एक साल से एक मल्टीनेशनल कंपनी में काम कर रहा था. उसका वेतन भी अच्छा खासा था.शर्मा जी ने उसका विवाह भी करवा दिया था. शर्मा जी अब नौकरी करते करते थक चुके थे. कई बार उनके दिल में विचार आया कि नौकरी छोड़ दें लेकिन एक दिन जब मालिक ने शर्माजी को किसी बात पर डाँटना शुरू कर दिया तो शर्माजी सब्र न कर सके और नौकरी छोड़कर अपने घर आ गए.

घर आकर उन्होंने अपने बेटे से कहा बेटा अब मैं थक गया हूं अब मुझसे नौकरी नहीं होती. लगभग एक माह बाद राहुल ने शर्माजी से कहाँ कि पापा मुझे अब अपनी नौकरी के लिए बेंगलुरु जाना होगा. मैं आपके खर्च के लिए वहाँ से पैसे भेजता रहूँगा और वहाँ की व्यवस्था होने के बाद आपको भी वहीं बुला लूँगा.शर्मा जी को कोई आपत्ति नहीं हुई और उनके बेटा बहू बँगलौर चले गए.

दो माह तक बेटा उनके पास खर्च के लिए पैसे भेजता रहा. लेकिन उसके बाद उसने पैसे भेजना बंद कर दिया.

और फिर फोन पर आखिर बेटे ने पैसे भेजने से मना कर दिया. कहा कि पापा मैं अपना ही खर्च नहीं चला पाता तो आपको कहाँ से दूँ. शर्मा जी को एक बार फिर से नौकरी करनी पड़ी. ऐसा लगता है कि उनका 35 साल पुराना बेरोजगार होने का डर, कभी खत्म नहीं होगा

पिकनिक बच्चों को प्यारी

रचनाकार- आसिया फारूकी

पापा मानो बात हमारी,
पिकनिक की कर लो तैयारी.
बोर हो गए पढ़ते-पढ़ते,
ढोते बस्ता भारी-भारी..

ऑफिस का मत करो बहाना,
कल संडे छुट्टी सरकारी.
मम्मी तुम भी अभी बना लो,
खाने-पीने की चीज़ें सारी.

लेटेंगे हम नरम घास पर,
छुपम-छुपाई भी खेलेंगे.
तितली-फूलों को मीत बना,
खुशियाँ सारी मन भर लेंगे..

पार्क में झूला हम झूलेंगे,
नहीं करेंगे मारामारी.
शाम ढले वापस आएँगे,
ले पिकनिक की यादें सारी..

A, B, C Request from a child

Poet- Manoj Kashyap

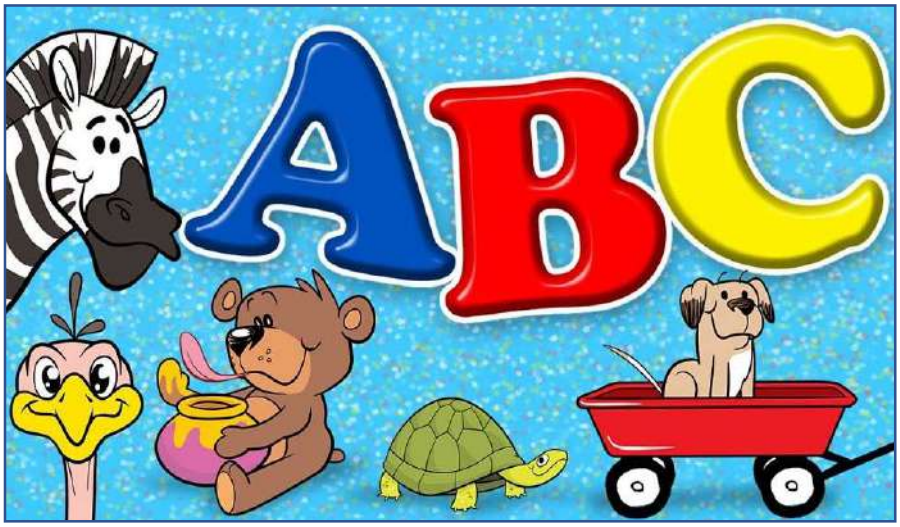

Advise me, but don't Accuse me.
Bless me, but don't Beat me,
Correct me but don't Criticize me.
Direct me, but don't Discourage me,
Encourage me, but don't Embarrass me.
Feed me, but don't Fill me,
Guide me, but don't Grill me.
Help me, but don't Hate me,
Inspire me, but don't Insult me.
Joke with me, but don't Jeer at me,
Know my Interest, but don't Kill my Interests.
Love me, but don't leave me,
Motivate me, but don't misguide me.
Nurture me, but don't Neglect me,
Oblige me, but don't Oppose me.
Persuade me, but don't Punish me,
Quicken me, but don't Quell me.

Reply me, but don't Repel me,
Support me, but don't Suppress me.
Teach me, but don't Tease me,
Understand me, but don't Underestimate me.
Vitalize me but don't Vilify me,
Excuse me but don't Excuse me again and again.
You are my Role model, but I know you will not my Rule model,
Zoom my happiness, but don't Zoom my sadness….

पिता "गृह कि छत"

रचनाकार- निमिशा कुर्रे

गृह कि नींव हैं माँ, तो पिता गृह कि छत.
सुख चाहे संतान कि, इसी कामना में रत..

साहस और बल है,वात्सल्य भी है अपार.
पिता ईश्वरतुल्य हैं, कहे सकल संसार..

धूप भी शीतल लगे, जब हो पिता कि छाँव.
आह न करे कभी, हंसकर चले खार में पाँव..

परिश्रम और शौर्य का, कैसा अदभुत मेल.
पिता बिन सब नीरस है,जीवन लगता जेल..

शीश पितृ चरण में हो, सेवा है हमारा फर्ज़.
अमर है ये ऋण सदा, जिसका न उतरे कर्ज..

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

फटी कमीज़

उस दिन खेलकूद के कालखंड में दसवीं और ग्यारहवीं कक्षा के बच्चों के बीच कबड्डी का मैच चल रहा था. दसवीं की टीम कुछ कमजोर पड़ रही थी. ऐसे में इस टीम के दीपक के पैर में अचानक मोच आ गई. दीपक बहुत अच्छा खेल रहा था.

अब सवाल था उसकी जगह किसे लिया जाए.

दसवीं के सारे बच्चे चिल्लाने लगे, "आनंद... आनंद..."

आनंद डरकर पीछे हो गया. पर उसके साथी उसका हाथ पकड़कर उसे खींचने लगे. आनंद प्रतिरोध करता रहा. इस खींचतान में अचानक चर्रऽऽऽऽऽ की आवाज़ के साथ आनंद की कमीज़ बांह से फट गई.

एकाएक सभी सहम गए. उनके हाथ ढीले पड़ गए. आनंद ने गर्दन घुमाकर अपनी कमीज़ देखी. उसकी आंखें डबडबा गईं. उसे हमेशा इसी बात का डर रहता था कि खेलते हुए कहीं कपड़े न फट जाएं. और आज वही हो गया. उसने किसी से कुछ न कहा,अपना बस्ता उठा सर झुकाए मैदान से बाहर निकल गया.

घर लौटते हुए उसे लग रहा था कि ये रास्ता कभी खत्म न हो.

पिताजी के गुज़र जाने के बाद एक बरस में ही घर की दशा बहुत खराब हो चुकी थी. आय का कोई साधन न था. जरूरतों ने एक- एक कर मां के गहने बिकवा दिए थे. कुछ खरीदने की कल्पना करना भी मुश्किल था. ऐसे में आज उसकी ये कमीज़ फट गई.

उसकी आंखों में मां का उदास चेहरा घूम रहा था. उसने तय कर लिया कि मां को इसका पता न चलने देगा.

घर पहुंचते ही उसने अपनी कमीज़ उतारी और तह लगाकर बस्ते में ही रख लिया.

कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गई कहानी

आनंद ने उस दिन अपनी माँ को कमीज के फटने के बारे मे कुछ भी पता नही चलने दिया और अपनी कमीज को सुई धागे से स्वयं ही सिल लिया. अगली सुबह जब वह स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था तब उसे लगा कि सुई धागे से सिली हुई कमीज देख कर अन्य बच्चे उसका मजाक उड़ाएँगे. इसी उधेड़बुन में वह स्कूल पहुँचा. वह सीधे सभा कक्ष में गया जहाँ प्रतिदिन प्रार्थना सभा होती है. प्रार्थना के बाद आनंद को मंच पर बुलाया गया वह सकुचाते हुए मंच पर पहुँचा. सभी दोस्त आनन्द की खराब आर्थिक स्थिति के बारे में जानते थे,इसलिए उन सभी ने मिलकर आनंद के लिए नई कमीज के साथ साथ पूरी गणवेश भेंट करने का इंतजाम कर लिया था. पहले तो आनंद ने यह सब लेने से इनकार कर दिया परन्तु सभी दोस्तों के आग्रह पर उसने सभी सामान ले लिया और सबको धन्यवाद दिया. छुट्टी के बाद घर जाकर आनंद ने माँ को सारी बात बताई तो माँ ने भी आनंद के दोस्तों की बहुत प्रशंसा की. उस दिन के बाद आनंद की अपने दोस्तों के साथ दोस्ती और भी गहरी हो गई.

टेकराम ध्रुव 'दिनेश' व्दारा पूरी की गई कहानी

दूसरे दिन माँ ने आनंद से पूछा- बेटा, तुम्हारी कमीज़ कहाँ है, कब से ढूँढ़ रही हूँ साफ करने के लिए! मिल ही नहीं रही है? आनंद ने कहा-' रहने दो न माँ आज साफ करने की जरूरत नहीं है.' माँ ने कहा- ' दो दिन हो गए हैं कमीज गंदी हो गई होगी; ला दे.' आनंद ने हिचकिचाते हुए कहा-' माँ कल स्कूल में खेल के समय खींचतान में कमीज़ की बाँह फट गई है, आप गुस्सा करोगी यह सोचकर मैं हिचक रहा था.' अरे खेलकूद में कपड़ों का गंदा होना और फटना स्वाभाविक है बेटा, तू चिंता क्यों करता है. सब ठीक हो जाएगा. माँ ने कहा.

तभी आनंद के दोस्तों ने आकर कहा- कल जो हुआ उसके लिए हमें माफ कर दो मित्र, आइंदा हम सभी इस बात का ध्यान रखेंगे.आज तुम्हे स्कूल नहीं जाना है क्या?आज के मैच में तुम्हारी बहुत जरूरत है.कल दीपक को चोट लगने के कारण आज वह नहीं खेल पाएगा, उसकी जगह तुम ही ले सकते हो.आज का मैच निर्णायक है मित्र, हमें तुम पर पूरा विश्वास है कि तुम हमारी टीम को हारने नहीं दोगे.

आनंद ने कहा- मगर आज मेरा मन नहीं है जानें का.

तभी माँ ने आकर कहा- चलो तुम्हारा मन बना देते हैं जाने का. तुम लोग चिंता मत करो बच्चो, आनंद जरूर जाएगा और अपनी टीम की जीत के लिए जरूर खेलेगा. मगर माँ..... आनंद ने कुछ कहना चाहा, पर बीच में ही माँ ने कहा- 'जहाँ चाह वहाँ राह, ये रहे नए कपड़े, मैंने तेरे लिए लेकर रखे थे, चल तैयार हो जा'.

आनंद बहुत खुश हुआ. मां को प्रणाम कर जीत का हौसला लेकर अपने दोस्तों के साथ स्कूल के लिए निकल पड़ा.

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

आनंद घर पहुँचकर भी बहुत उदास था. आनंद को हंसता-खेलता न देखकर उसकी माँ ने पूछा "बेटा तुम जब से स्कूल से आए हो तब से उदास दिख रहे हो, क्या बात है मुझे बताओ? स्कूल में कुछ हुआ क्या?किसी से लड़ाई तो नहीं हुई." ऐसी कोई बात नहीं है माँ, मैं ठीक हूँ कहते हुए आनंद अपना होमवर्क करने लगा. अगले दिन माँ से बहाना बनाकर आनंद स्कूल नही गया. इसके बाद तो आनंद रोज कोई नया बहाना बनाकर चार पाँच दिनों तक स्कूल नहीं गया. अब उसकी माँ समझ गई कि जरूर स्कूल में कुछ हुआ होगा इसलिए आनंद स्कूल नहीं जा रहा है, शिक्षक से मिलकर मुझे बात करनी होगी.

इधर आनंद के स्कूल ना आने से उसके कक्षा शिक्षक भी परेशान हो गए. उन्होंने बच्चों से पूछा कि आनंद कभी अनुपस्थित नहीं रहता, लेकिन उसे क्या हुआ जो चार-पांच दिनों से स्कूल नहीं आ रहा है? बच्चों ने आनंद की कमीज फटने व उसके घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने की बात शिक्षक को बताई. कक्षा शिक्षक ने यही बात अपने हेड मास्टर के साथ पूरे स्टाफ को बताई. विद्यालय के सभी शिक्षकों ने मिलकर आनंद की पढ़ाई की जिम्मेदारी लेने का निर्णय लिया.

अगले दिन कक्षा शिक्षक कुछ बच्चों के साथ आनंद के घर जाकर उसकी माँ से मिले. आनंद की माँ ने आनंद के उदास होने की बात कक्षा शिक्षक को बताई. शिक्षक ने आनंद की मां को आश्वस्त किया कि अब वे आनंद की पढाई के लिए चिंता न करें सभी शिक्षकों ने आनंद को पढ़ाने के लिए मिलकर जिम्मेदारी ली है. आनंद व उसकी माँ ने शाला के सभी शिक्षकों को धन्यवाद दिया. आनंद के लिए पुस्तक कॉपी एवं यूनिफॉर्म की व्यवस्था कर दी गई.अब आनंद मन लगाकर पढ़ने के साथ खेल कूद में भी हिस्सा लेने लगा. स्कूल के सभी शिक्षकों ने आनंद को शुभकामनाएं देते हुए आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

चित्रा का हारमोनियम

चित्रा आज बहुत खुश थी. आज उसका जन्मदिन था. वैसे तो चित्रा अपना हर जन्मदिन अपने माता-पिता और दोस्तों के साथ मनाया करती थी पर इस बार अपने जन्मदिन का चित्रा को बहुत बेसब्री से इंतज़ार था.

चित्रा कक्षा आठवीं में पढ़ती है. उसके घर में माता-पिता और छोटे भाई सहित चार लोग हैं.पढ़ाई के साथ चित्रा की रुचि चित्रकारी, बागवानी और संगीत में भी है. इसी साल चित्रा ने संगीत सीखना शुरू किया है.संगीत की कक्षा में सभी अपने साथ अपनेअपने वाद्ययंत्र लेकर आते हैं पर चित्रा के पास अपना कोई वाद्ययंत्र नहीं है वह कक्षा में संगीत शिक्षक के हारमोनियम को ही बजाकर अपनी इच्छा पूरी कर लेती है.

संगीत सीखने में चित्रा की लगन देखकर संगीत शिक्षक ने चित्रा के पिताजी को सलाह दी कि वे चित्रा के लिए उसकी पसंद का कोई वाद्ययंत्र खरीद लें.

चित्रा की माँ ने उसे बता दिया था कि आज जन्मदिन पर पिताजी उपहार में हारमोनियम देने वाले हैं. जब से चित्रा को यह बात पता चली तब से ही वह अपने जन्मदिन की आतुरता से प्रतीक्षा करने लगी और आज उसका जन्मदिन आ ही गया.

जन्मदिन का आयोजन खत्म हुआ और दोस्तों के दिए उपहारों के साथ चित्रा को हारमोनियम भी मिल गया. पर अगले ही दिन से चित्रा का व्यवहार बदल गया. अब वह हर वक्त सिर्फ

हारमोनियम में ही रमी रहती. चित्रकारी और बागवानी तो वह भूल ही गई.पढाई भी केवल होमवर्क तक सीमित हो गई.

अब इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी आप कल्पना कीजिए और कहानी पूरी कर हमें अगले माह की 15 तारीख तक ईमेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे.

बैंगन..बच्चों की दुश्मन

रचनाकार- अनुरमा शुक्ला

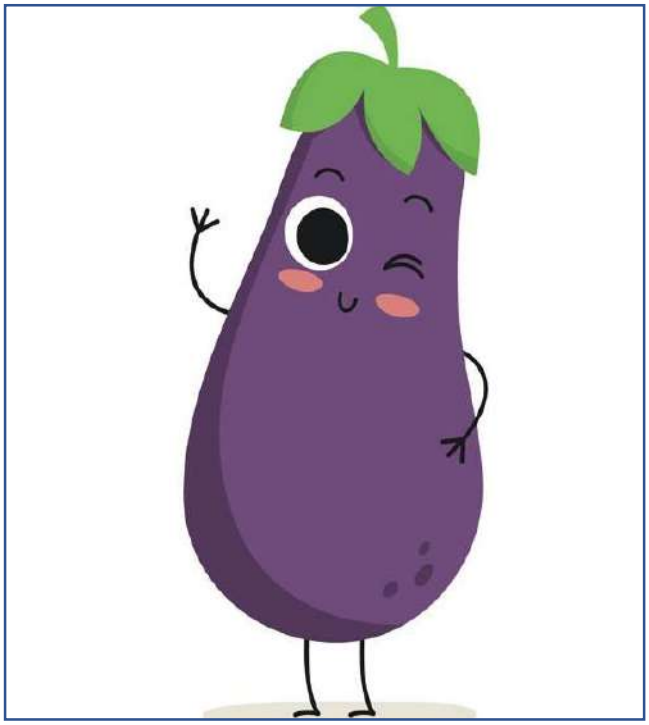

पापा जब भी बाजार जाते,
हट्टे-कट्टे बैंगन जरुर हैं लाते.

बैंगनी कपड़ों में यह इठलाता,
हम बच्चों को खूब चिढ़ाता.

हर सब्जी के संग बन जाए,
बेस्वाद बैंगन हमें ना भाए.

मम्मी जब भी बैंगन बनाती,
देख हमारी भूख मिट जाती.

थाली में नाचता बेगुण बैंगन,
बच्चों का सबसे बड़ा ये दुश्मन.

पर्यावरण

रचनाकार- वीरेंद्र कुमार साहू

परियों की कथा सी सुंदर,
जीवन की रसधार लिए
मानव जीव के खातिर अमृत
प्रकृति अपना उपहार दिए.

स्वच्छ निर्मल गुणकारी,
जीवों में प्राण दिए.
इसी से मिले बल-बुद्धि,
प्रयत्न हेतु साहस दिए.

पर है मानो तूने उसकी,
सिद्धता पर प्रहार किया.
खाली अपने सुख के खातिर,
नित्य प्रकृति का संहार किया.

किया विध्वंस तूने उसी का,
जिसने तुझको पाला-पोसा.
रूप बिगाड़ा तूने उसका,
कुरूप उसे दिन-रात किया.

अब भी समय है संभल जा,
प्रकृति का कर संरक्षण.
वरना होगा जग का विनाश,
इस सत्यता का तू कर ले वरण.

पञ्चतन्त्र की कथा- व्यापारी का पतन और उदय

वर्धमान शहर में दंतिल नामक एक बहुत कुशल व्यापारी रहता था. उसकी क्षमता और योग्यता से प्रभावित होकर राजा ने उसे राज्य का प्रशासक नियुक्त कर दिया. व्यापारी दंतिल के प्रशासक के रूप में कार्य से राजा और नागरिक संतुष्ट एवं प्रसन्न थे.

कुछ समय बाद व्यापारी दंतिल ने अपनी पुत्री के विवाह के उपलक्ष्य में एक भव्य भोज का आयोजन किया. भोज में उसने राज परिवार एवं प्रजाजनों सभी को आमंत्रित किया.भोज में शामिल राजपरिवार का एक सेवक, (जो महल में झाड़ू लगाता था) भूलवश एक ऐसे आसन पर बैठ गया जो केवल राज परिवार के सदस्यों के लिए रखा गया था. सेवक को उस आसन पर बैठा देखकर व्यापारी दंतिल अत्यधिक क्रोधित हुआ और उसने सेवक को अपमानित कर वहाँ से निकाल दिया. अपमानित सेवक ने प्रण किया कि वह व्यापारी दंतिल से अपने अपमान का प्रतिशोध अवश्य लेगा.

भोज के अगले दिन वही सेवक राजा के कक्ष में झाड़ू लगा रहा था. राजा उस समय अर्धनिद्रा की अवस्था में था. अपनी योजना के अनुसार सेवक धीमे स्वर में बड़बड़ाने लगा “इस व्यापारी दंतिल का इतना साहस कि वह रानी के साथ दुर्व्यवहार करे.” यह सुन कर राजा चौंक गया और उसने सेवक से पूछा "क्या तुम सच कह रहे हो? क्या तुमने स्वयं दंतिल को रानी से दुर्व्यवहार करते देखा है?" भयभीत होकर सेवक ने राजा के चरण पकड़ लिए और कहा, "मुझे क्षमा करें महाराज, मैं कल रात ठीक से सोया नहीं. पता नहीं आधी नींद में मैं क्या बड़बड़ा

रहा था." यह सुनकर राजा ने सेवक से कुछ नहीं कहा लेकिन उसके मन में शंका उत्पन्न हो गई.

उसी दिन राजा ने दंतिल के महल में निरंकुश घूमने पर प्रतिबंध लगा दिया और उसके अधिकार भी कम कर दिए.

अगले दिन जब व्यापारी दंतिल महल में आया तो राजा के आदेशानुसार प्रहरियों ने द्वार पर ही उसे रोक लिया. प्रहरियों के ऐसे व्यवहार से दंतिल बहुत आश्चर्यचकित हुआ. वहीँ पर खड़े सेवक ने व्यंग्य भरे स्वर में कहा, "अरे प्रहरियों, क्या तुम इन्हें जानते नहीं? ये बहुत प्रभावशाली व्यक्ति हैं यदि इन्हें क्रोध आ गया तो ये तुम्हें महल से बाहर फिंकवा सकते हैं. जैसे इन्होने मुझे अपने भोज से बाहर फिंकवा दिया था."

यह सुनकर व्यापारी दंतिल समझ गया कि अपने अपमान के प्रतिशोध के लिए उसी सेवक ने कोई षड्यंत्र रचा है. उस समय दंतिल महल से चला गया. अगले दिन दंतिल ने सेवक को अपने घर भोजन पर आमंत्रित किया. व्यापारी दंतिल ने सेवक की खूब आव-भगत की फिर बड़ी विनम्रता से भोज के दिन किये गए अपमान के लिए क्षमा माँगी. सेवक बहुत प्रसन्न हुआ और व्यापारी दंतिल से बोला, "आप चिंता ना करें, मैं आपका खोया हुआ सम्मान आपको अवश्य वापस दिलाऊँगा."

अगले दिन राजा के कक्ष में झाड़ू लगाते हुए सेवक फिर बड़बड़ाने लगा, “हे भगवान, हमारा राजा भी कैसा मूर्ख है कि स्नानगृह में ककड़ियाँ खाता है." सेवक की बात सुनकर राजा क्रोधित होकर बोला, “अरे मूर्ख, तू यह क्या कह रहा है? तू अगर मेरे कक्ष का सेवक ना होता, तो मैं तुझे कठोर दण्ड देता." सेवक घबराकर राजा के चरणों में गिर पड़ा और क्षमा माँगने लगा.

अब राजा ने विचार किया कि जब यह सेवक मेरे बारे में ऐसी अनर्गल बातें कह रहा है तो इसने दंतिल के बारे में भी असत्य कहा होगा. मैने अकारण ही व्यापारी दंतिल को दंडित किया. ऐसा विचार कर राजा ने व्यापारी दंतिल को महल में उसकी प्रतिष्ठा वापस दिला दी.

इसलिए कहा गया है कि कोई व्यक्ति बड़ा हो अथवा छोटा, हमें हर किसी के साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए.

बाल पत्रिका 'किलोल'

रचनाकार- डॉ.त्रिलोकी सिंह, प्रयागराज

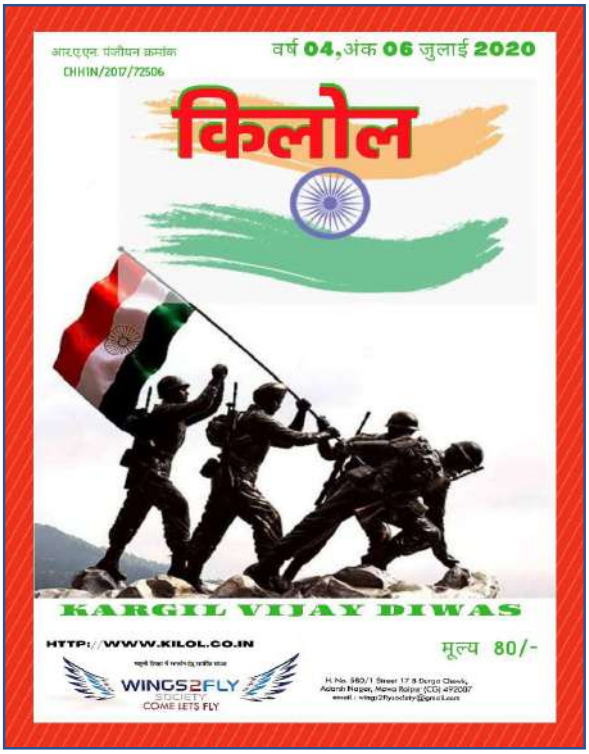

बाल पत्रिका वही श्रेष्ठ है,
जो बच्चों के हित हो हितकर.
जो निज रचनाओं से उनको,
प्रगति-राह पर करे अग्रसर.

जो बच्चों को सद्शिक्षा दे,
जो बच्चों का ज्ञान बढ़ाए.
जो बच्चों में गुरुजन के प्रति,
प्रेम-भाव का भाव जगाए.

जो बच्चों को संस्कार दे,
उनका पथ प्रशस्त जो कर दे.
जो उनका अज्ञान मिटाकर,
ज्ञान-ज्योति मानस में भर दे.

बाल पत्रिका इस 'किलोल' को,
बड़े ध्यान से पढ़ना बच्चो.
सभी क्षेत्र में ज्ञान बढ़ाकर,
हरदम आगे बढ़ना बच्चो.

Everybody has a name!

Poetess- Valentina Masih

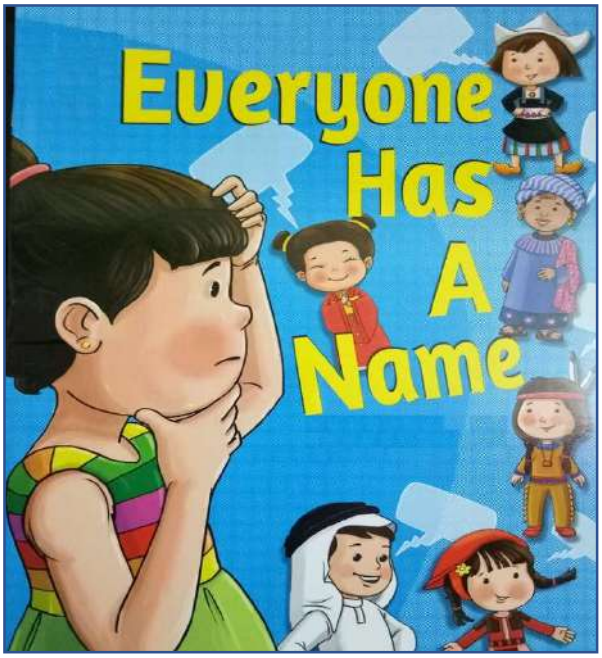

As Shakespeare said, “What is in the Name?”
But everyone wants a name,
Just to add on to their fame!
And eventually everything in this world has its Name,
A cherry on top ‘Valentina’ is my name…
Everybody has a name,
Some are different, some are same,
Some are long, some are short,
All are right, none are wrong.
But in their mother’s eyes all are tall!
My name is Valentina,
It is very special to me
It is exactly who I want to be!
I am Valentina – A Ray of Hope, Healthy & Strong.
A blessing for you, me, one and all!
You can Google it & know it all…
Everybody has a name
And my name is Valentina
My name is my Identity!
If you want to know me better
Just give me a Call!

हरेली

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

हरेली तिहार अच्छी फसल की कामना के साथ प्रकृति की पूजा का पर्व है. छत्तीसगढ़ के किसानों का सबसे बड़ा पर्व हरेली सावन के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है. इस पर्व की धूम शहरों और गाँवों में नज़र आती है.

छत्तीसगढ़ में किसानों के पर्व प्रथम पर्व हरेली से प्रारंभ होते हैं. किसान हरेली पर्व बड़ी धुमाधाम से मनाते हैं. किसान इस पर्व के दिन खेती में में काम आने वाले अपने औजारों की पूजा करते है, वहीं घरों में छत्तीसगढ़ी पकवान बनाए जाते हैं. इस दिन किसान अपने-अपने कुल देवताओं की पूजा आराधना करते हैं. हरेली पर गाय, बैल और भैंस को गूड़ और चीला खिलाया जाता है. गाँव के बच्चे गेड़ी पर चढ़ते है. गेड़ी दौड़ व नृत्य का भी जगह- जगह आयोजन होता है. हरेली पर्व के दिन गाँवों में युवाओं की टोली नारियल फेंक कर नारियल जीत का खेल खेलते है. जहाँ किसान कृषि उपकरणों की पूजा कर पकवानों का आनंद लेते हैं तो वहीं युवा और बच्चे गेड़ी चढ़ने का मजा लेते हैं. इस दिन सुबह से ही घरों में गेड़ी बनाने का काम शुरू हो जाता है. ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो इस दिन 20 से 25 फीट ऊँची गेड़ी बनाते हैं और उसपर चढ़ते हैं.

किसान अपने कुल देवी-देवताओं की पूजा करते हैं. किसान नाँगर, गैंती, कुदाली, फावड़ा समेत कृषि के काम आने वाले सभी तरह के औजारों की साफ-सफाई कर उन्हें एक स्थान पर रखते है और इसकी पूजा-अर्चना करते है. इस अवसर पर सभी घरों में गुड़ का चीला बनाया जाता है. हरेली के दिन लोग अपने-अपने कुल देवता और ग्राम देवता की पूजा भी करते है. ग्रामीण

क्षेत्रों में सुबह से शाम तक उत्सव की धूम रहती है. कुल मिलाकर अच्छी फसल की कामना के साथ प्रकृति की पूजा ही इस पर्व की विशेषता है. पूरे छत्तीसगढ़ में हरेली धूमधाम से मनाई जाती है. इस पर्व के दिन कहीं कहीं मुर्गे और बकरे की बलि देने की भी परम्परा है. हरेली के दिन यादव समाज के लोग बगरंडा की पत्तियाँ इकट्ठी कर गाय, भैस व बैलों को नमक और बगरंडा की पत्ती बीमारी से बचाव के लिए खिलाते है. कहीं कहीं पर स्वयं किसान अपने मवेशियों को खिलाते हैं.

परोपकार

रचनाकार- पुष्पा कुमारी, मेदिनीनगर, झारखंड

"बहुजनहिताय" "बहुजन सुखाय",
संस्कृति हमारी ये पवित्र उदेश्य अपनायें.
कर्म फलीभूत मानव का तभी होय,
हृदय में रख सहानुभूति, परोपकार कर जायें.

बहे बयार प्राण-वायु करे संचार,
धरा-आकाश मिल चलाये संसार.
मन करूणामय हो,असहाय पे करें उपकार,
धनहीन भले हों पर हो मृदुल व्यवहार.

मानवता भूला मानव ने तब आई संकट,
महामारी ने विपदा ढायी और
परिस्थिति आई बड़ी विकट.

फिर से...जागी परोपकार की भावना,
भेद-भाव भूलकर सब आये हृदय निकट..

छत्तीसगढिया के बासी

रचनाकार- कु. साक्षी, कक्षा आठवीं, शा.पू.मा.शाला, पंधी, बिलासपुर

गजब मिठाथे रे संगी,
मोर छत्तीसगढ़ के बासी.
ही हमर बर तिरिथ-बरत हे,
हमर बर मथुरा कासी.

बड़े बिहनिया करथन मुखारी,
अउ झड़कथन बासी.
दिन भर करथन काम बुता,
करथन बत्तर- बियासी.

रुक्खा-सुक्खा जउन मिल जाथे,
भाजी कोदई तरकारी.
नून मिर्ची संग रगर के खाथन,
मिल के सब संगवारी.

कहाँ पाबोन हम खीर सोंहारी,
कहाँ जलेबी पोहा.
कहाँ ले पाबोन रसगुल्ला,
कहाँ ले पाबो खोवा.

हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि चरक

भारत का इतिहास अत्यंत प्राचीन है.ज्ञान-विज्ञान, कला-साहित्य आदि विभिन्न विधाओं में भारत सदा समृद्ध रहा है.हमारे ज्ञानी ऋषियों ने ज्ञान व नियमों की सृष्टि की. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में ज्ञान-विज्ञान की बहुत सी बातें समाहित हैं.

किलोल के माध्यम से हम भारत के कुछ महान ऋषियों और उनके आविष्कारों के विषय में आपको संक्षिप्त जानकारी देंगे. जिससे आप सब भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास से न सिर्फ़ परिचित होंगे बल्कि अपने पूर्वजों पर गौरवान्वित महसूस करेंगे.

इस श्रृंखला की शुरुआत हम आयुर्वेद के जनक महर्षि चरक से कर रहे हैं.

महर्षि चरक आयुर्वेद विशारद के रूप में विख्यात हैं. वे कुषाण राज्य के राजवैद्य थे,इस बात का उल्लेख त्रिपिटक के चीनी अनुवाद में मिलता है. महर्षि चरक के द्वारा रचित चरक संहिता आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रन्थ है. चरक संहिता में रोगनाशक एवं रोगनिरोधक दवाओं का उल्लेख है तथा सोना, चाँदी, लोहा, पारा आदि धातुओं की भस्म एवं उनके उपयोग का वर्णन मिलता है. आचार्य चरक ने आचार्य अग्निवेश के अग्निवेशतन्त्र में कुछ स्थान तथा अध्याय जोड़कर उसे नया रूप दिया जिसे आज हम चरक संहिता के नाम से जानते है.

चरक संहिता आयुर्वेद में प्रसिद्ध है. इस ग्रंथ के उपदेशक अत्रिपुत्र पुनर्वसु, ग्रंथकर्ता अग्निवेश और प्रतिसंस्कारक चरक हैं.

दो हजार वर्ष पूर्व भारत में महान चिकित्सक (Doctor) चरक हुए है, जिन्होंने आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में शरीर विज्ञान, निदान शास्त्र और भ्रूण विज्ञान पर "चरक संहिता" नामक पुस्तक लिखी. इस पुस्तक को आज भी चिकित्सा जगत में बहुत सम्मान दिया जाता है.

महर्षि चरक कहते थे-" जो चिकित्सक अपने ज्ञान और समझ का दीपक लेकर बीमार के शरीर को नहीं समझता, वह बीमारी कैसे ठीक कर सकता है. इसलिए सबसे पहले उन सब कारणों का अध्ययन करना चाहिए जो रोगी को प्रभावित करते है, फिर उनका उपचार करना चाहिए.ज्यादा महत्वपूर्ण बीमारी से बचाना है न कि उपचार करना."

चरक ऐसे पहले चिकित्सक थे जिन्होंने पाचन, चयापचय (भोजन-पाचन से सम्बंधित प्रक्रिया) और शरीर प्रतिरक्षा की अवधारणा दी थी. उनके अनुसार शरीर में पित्त, कफ और वायु के कारण दोष उत्पन्न हो जाते है. यह दोष तब उत्पन्न होते है जब रक्त, मांस और मज्जा खाए गए भोजन पर प्रतिक्रिया करते हैं. चरक ने यह भी स्पष्ट किया कि समान मात्रा में खाया गया भोजन अलग-अलग व्यक्ति के शरीर में भिन्न दोष पैदा करता है अर्थात एक व्यक्ति का शरीर दूसरे व्यक्ति के शरीर से भिन्न होता है. उनका कहना था कि बीमारी तब उत्पन्न होती है जब शरीर के तीनों दोष असंतुलित हो जाते हैं. इनके संतुलन के लिए इन्होंने कई औषधियाँ बनाईं.

चरक संहिता का महत्व:- चरक सहिंता (Charaka Samhita)आयुर्वेद का प्राचीनतम ग्रन्थ है.चरक संहिता संस्कृत में लिखी गई है. इस ग्रंथ को 8 स्थानों और 120 अध्यायों में बाँटा गया है जिसमे 12 हजार श्लोक और 2000 औषधियाँ हैं. चरक संहिता के सूत्र स्थान में आहार-विहार, पथ्य-अपथ्य,शारीरिक और मानसिक रोगों की चिकित्सा का वर्णन है.

निदान स्थान में 8 प्रमुख रोगों के कारणों की जानकारी है.

विमान स्थान में स्वादिष्ट, रुचिकर पौष्टिक भोजन का उल्लेख है.

शरीर स्थान में मानव शरीर की रचना, गर्भ में बालक के विकास की प्रक्रिया तथा उसकी अवस्थाओं का महत्व बताया गया है.

इन्द्रिय स्थान में रोगों की चिकित्सा पद्दति का वर्णन है.

चिकित्सा स्थान में कुछ विशेष रोगों के उपचार का उल्लेख है.

कल्प स्थान में साधारण उपचार की जानकारी दी गई है.

सिद्धि स्थान में सामान्य रोगों की जानकारी दी गई है.

आयुर्वेद की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाने वाली “चरक संहिता” में भारत के अलावा यवन, शक, चीनी आदि जातियों के खानपान और जीवनशैली का भी उल्लेख मिलता है. इस पुस्तक का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी किया जा चुका है.

अरब के प्रसिद्ध इतिहासकार और विद्वान अल-बरूनी ने कहा था “हिन्दु ओं की एक पुस्तक चरक के नाम से प्रसिद्ध है, जो कि औषधि की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक मानी जा सकती है.“

भाखा जनऊला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

भाखा जनउला

1 ज			2 ब		3	■	4 न		5
	■	■		■	6 ह	7		■	
	■	■	8					9 न	■
■	10 त			■	■	■	11 न		
12 ध		■	■	13 बें			■		■
	■	■	14 गें		■	■	15 क		16
17 स				■	■	18 दा		■	
	■	■	19		20		■	21 ध	
	1 रु	■		■		■	■		■
22 र			■	■	23 र				

बाएँ से दाएँ– 01.चकाचौंध 04.चमड़े का रस्सी 06.हारा हुआ 08.क्रियाकर्म के तीसरे दिन का कार्यक्रम 10.तालाब 11.छोटा–छोटी, 12.किनारे 13बन्दर 14.हरेली त्यौहार मे चढ़ा जाने वाला लकड़ी 15.चांवल का कण 17.एकदम सीध 18.शराब 19.पेंड़–पौधा 21.पकड़ा 22.रात 23छत्तीसगढ़ एक लोकनृत्य

ऊपर से नीचे– 01.जुड़वा 02.बराती 03.गिरवी 04.दसगात्र 05.लता, बेल 7.रुको 9.बचपन 10.नीचे, तल 12.धनुष–बाण 13.लकड़ी का कुंडी 14. गेचुआ 15.कड़ुआ 16.घुमाया 18.माँ, माता 20.राहल 21.धामन सांप

इस माह के भाखा जनऊला के उत्तर अगले माह दिए जायेंगे